FIRST LESSONS IN SANSKRIT

प्रकाशकीय वक्तव्य

संसार की प्रायः अन्य सभी भाषाओं का व्याकरण केवल शुद्ध रूप से तत्तत् भाषा लिखने और बोलने का सहायक मात्र होता है; किन्तु संस्कृत का व्याकरण एक स्वतन्त्र शास्त्र ही है और एक विचार-शास्त्र के रूप में ही अपना महत्त्व रखता है। विषय की व्यापकता तथा गम्भीरता की दृष्टि से "द्वादशभिर्वर्षैर्व्याकरणं श्रूयते" प्राचीन मनीषियों का यह कथन सर्वथा सत्य है।

आज के इस व्यस्त युग में केवल संस्कृत-व्याकरण के ज्ञान के लिए इतना अधिक समय देना सबके लिए संभव नहीं है। अतः पिछली सदी में जब संस्कृत के प्रति पाश्चात्त्य विद्वानों का ध्यान आकर्षित हुआ तभी से सरल ढंग से और अल्प समय में संस्कृत भाषा सीखने की उपयोगी शैली का अन्वेषण होने लगा और नवीन शैली में पुस्तकों का निर्माण भी प्रारम्भ हुआ। उसी क्रम में बनारस गवर्नमेंन्ट संस्कृत कालेज के तत्कालीन अध्यक्ष डॉ० जे० आर० वैलेन्टाइन कृत अंग्रेजी माध्यम से विरचित "*Sanskrit First Lesson*" नामक पुस्तक का प्रकाशन हुआ। विद्वान् लेखक की उपर्युक्त कृति अपने महत्त्व और उपयोगिता के कारण देश-विदेश के संस्कृत शिक्षार्थियों में विशेष प्रसिद्ध हुई।

लेखक के अपने विज्ञापन से पता चलता है कि उक्त पुस्तक अंग्रेज विद्यार्थियों को दृष्टि में रखकर ही लिखी गई थी। किन्तु अनुभव की बात यह है कि उपर्युक्त पुस्तक संस्कृत का प्रारम्भिक ज्ञान प्राप्त करने वाले भारतीय विद्यार्थियों के लिए भी कम उपयोगी नहीं है। इसके अतिरिक्त

भारतीय संस्कृति से प्रेम रखने वाले तथा गीता, उपनिषद्, पुराण और संस्कृत के प्रसिद्ध कवियों की रचनाओं के अध्ययन की इच्छा रखने वाले जिज्ञासुओं के लिए भी यह पुस्तक बहुत ही उपादेय है।

उपर्युक्त उपयोगिता को ध्यान में रख कर ही इसे नवीन परिधान में पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत किया जा रहा है। इस संस्करण की विशेषता यह है कि इसमें मूल अँग्रेजी के साथ ही प्राञ्जल हिन्दी में उसका अनुवाद भी संलग्न है; जिससे केवल हिन्दी जानने वाले विद्यार्थी भी डॉ० वैलेन्टाइन के परिश्रम का लाभ उठा सकेंगे।

यदि इस पुस्तक से संस्कृत के जिज्ञासुओं और विद्यार्थियों का कुछ भी कल्याण हो सका तो उससे अनुवादक और प्रकाशक दोनों ही अपने श्रम को सफल समझेंगे।

"यावद् भारतवर्षं स्याद् यावद् विन्ध्यहिमाचलौ।
यावद् गङ्गा च गोदा च तावदेव हि संस्कृतम्॥"

—एच्० एच्० विलसन

विज्ञापन

उत्तर-पश्चिमी प्रान्तों की सरकार ने यह मत अपनाया है कि गवर्नमेण्ट कालेजों में अंग्रेज विद्यार्थियों द्वारा संस्कृत के अध्ययन को उस प्रकार के मानसिक प्रशिक्षण के साधनरूप में उपस्थित किया जा सकता है जिसे यूरोप में लैटिन और ग्रीक का अध्ययन प्रस्तुत करता है।

इस "प्रथम पाठों" में, जिनकी योजना श्री टी० के० एर्नोल्ड के "फर्स्ट लैटिन बुक" के आधार पर की गयी है, और जो किसी नियमित संस्कृत व्याकरण के अध्ययन के पूर्व पढ़े जाने के लिए रचे गये है, उन शब्दों की रचना में जो नियमित व्याकरणों में पाठक के सामने आरम्भ में ही आ खड़े होते हैं, वर्णों की सन्धि के व्युत्पत्तिपरक नियमों को इस कृति के दूसरे भाग के लिए छोड़ दिया गया है—आरम्भ में केवल उन्हीं सन्धि-नियमों पर ध्यान आकर्षित किया गया है—जो वाक्य में एक साथ आने वाले सिद्ध शब्दों के रूप में परिवर्तन के लिये काम आते हैं।

प्रथमतः उन रूपों पर भी ध्यान आकृष्ट किया गया है (यथा क्रिया के प्रथमपुरुष एकवचन का रूप) जिनमें वाक्यों मे बहुशः प्रयुक्त होने वाले शब्द पाये जाते हैं और विद्यार्थियो को तत्काल ऐसे अभ्यास करने को दिये गये हैं, जिनमे अनेक उपयोगी शब्दों की इतनी बार आवृत्ति की गई है कि उनके पुनः जल्दी भूल जाने की संभावना नहीं रह जाती। प्रगति करने के साथ-साथ छात्र इसमे संभवतः यह आनन्ददायक अनुभव प्राप्त करेगा कि वह प्रगति कर रहा है—और इस विषय प्रवेश पर अधिकार प्राप्त कर लेने के बाद वह सरलता

से ऐसे व्याकरण से भयभीत नहीं होगा जो विषय के नितान्त नीरस प्रारम्भिक सूत्रों से प्रारम्भ होता है—जैसे प्रोफेसर विलसन और विलिअम्स के व्याकरण या अंग्रेजी अनुवाद सहित लघुकौमुदी।

यदि ऐसा सोचा जाय कि इसमें सीखने वाले के मानसिक प्रयत्न के ऊपर बहुत कम बल डाला गया है—तो इसका उत्तर यह है कि इन अभ्यासों का मुख्य प्रयोजन उतना मानसिक प्रयत्न को उत्तेजित करना नहीं हैं जितना कि सीखने वाले के स्मृतिपटल पर एक ऐसे विषय की कुछ विस्तृत रूपरेखा अङ्कित करना, जो यदि पहले ही अपने सभी सूक्ष्म विस्तारों के साथ प्रस्तुत किया जाय तो अरुचिकर और उद्वेगकारी सिद्ध हो सकता है।

बनारस कॉलिज
८वीं सितम्बर, १८५०

जे० आर० बी०

ADVERTISEMENT

The opinion has been adopted by the Government of the N. W. Provinces that the study of Sanskrit by the English pupils in the Government Colleges, might be made to furnish a means of mental discipline analogous to that which the study of the Latin and the Greek furnishes in Europe.

In these "First Lessons", the plan of which was suggested by Mr. T. K. Arnold's "First Latin Book", and which are intended to precede the study of any regular Sanskrit Grammar, the etymological rules for the permutation of letters in the formation of words which in the regular grammars the learner encounters at the outset, are remitted to a later division of the work,—attention being called at outset to those syntactical rules only—and to each rule only when a special occasion for it arises—which are of constant application in modifying the appearance of perfect words when they come together in a sentence.

Attention is also confined, in the first instance, to those forms, (such as the 3d person singular of the verb) in which the most constantly recurring words present themselves in sentences, and the pupil is set at once to write exercises, in which a number of useful words are repeated to frequently as to render unlikely their being readily forgotten again. The

pupil, whilst making progress, will here probably have the pleasant feeling that he is making progress—and, after mastering this introduction, he will not be so readily repelled by a grammar which starts from the driest elements of the subject—like the grammars of Professors Wilson and Williams, or the *Laghu Kaumudi* with its English Version.

If it should be thought that too little demand is here made upon the learner for the exertion of mental effort—the reply is this, that the main purpose of these exercises is not so much to provoke mental effort as to imprint on the memory of the learner some of the broadest outlines of a subject which, when first presented in all its details, is apt to prove repulsively bewildering.

Benares College,
8th September, 1850.

J. R. B.

विषय-सूची



CONTENTS



INTRODUCTION

प्रवेश

THE DEVANA'GARI' ALPHABET

देवनागरी वर्णमाला

The vowels, in the following pages, must be pronounced as follows : viz., a as in *Roman ; â* as in *father; i* as in *it; î* as in *police; u* as in *push; ū* as in *rude; e* as in *there; ai* as in *aisle; o* as in *so; au as ow* in *now.* The consonants are, in general, pronounced as in English. But *th* and *ph* must be sounded as in the words *anthill* and *uphill*, not as in *this* and *philology*.

VOWELS स्वर

अ *a*, आ *â*. इ *i*, ई *î*. उ *u*, ऊ *ū*. ऋ *ṛ*, ॠ *ṝ*, ऌ *ḷ*, ॡ *ḹ*, ए *e*, ऐ *ai*, ओ *o*, औ *au*, ˙ *(anusvâra) ṁ*. : *(visarga) ḥ*.

CONSONANTS व्यञ्जन

Gutturals	कण्ठ्य	क *ka,*	ख *kha,*	ग *ga,*	घ *gha,*	ङ *ṅa.*
Palatals	तालव्य	च *ca,*	छ *cha,*	ज *ja,*	झ *jha,*	ञ *ña.*
Cerebrals	मूर्धन्य	ट *ṭa,*	ठ *ṭha.*	ड *ḍa,*	ढ *ḍha,*	ण *ṇa.*
Dentals	दन्त्य	त *ta,*	थ *tha,*	द *da,*	ध *dha.*	न *na.*
Labials	ओष्ठ्य	प *pa,*	फ *pha,*	ब *ba,*	भ *bha,*	म *ma.*

Semi-vowels अन्तःस्थ

य *ya,* र *ra,* ल *la,* व *va.*

Sibilants and Aspirate

श *śa*, ष *ṣa*, स *sa*, ह *ha*.

The above forms of the *vowels* are used only at the beginning of a syllable. The vowel अ *a* is inherent in every consonant, and is sounded after every one which has not the mark of a pause thus—(viz., ्) subscribed, nor another vowel, in a contracted shape, attached to it. These other vowels, when not at the beginning of a syllable, assume the following contracted shapes.

स्वरों के ऊपर लिखे गये रूपों का प्रयोग केवल शब्द-खण्ड (सिलेबिल) के प्रारम्भ में होता है। 'अ' स्वर प्रत्येक व्यञ्जन में रहता है और इसका उच्चारण ऐसे प्रत्येक व्यञ्जन के अन्त में होता है जिसमें ् इस प्रकार व्यक्त किया जाने वाला विराम का चिह्न नहीं होता और न कोई दूसरा स्वर अपने संक्षिप्त रूप में जुड़ा होता है। ये दूसरे स्वर जब किसी शब्द-खण्ड के आरम्भ में नहीं आते तो निम्नाङ्कित संक्षिप्त रूप ग्रहण कर लेते हैं।

MEDIAL AND FINAL FORMS OF THE VOWELS

स्वरों के मध्यवर्त्ती एवं अन्त्य रूप

ा *â*, ि *i*, ी *î*, ु *u*, ू *ū*, ृ *ṛ*, ॄ *ṝ*, ॢ *ḷ*, ॣ *ḹ*, े *e*, ै *ai*, ो *o*, ौ *au*.

Example of the Vowels following the letter क् *k*.

क् के बाद आने वाले स्वरों के उदाहरण :—

क *ka*, का *kā*, कि *ki*, की *kî*, कु *ku*, कू *kū*, कृ *kṛ*, कॄ *kṝ*, कॢ *kḷ*, कॣ *kḹ*, के *ke*, कै *kai*, को *ko*, कौ *kau*, कं *kaṃ*, कः *kaḥ*. The vowels *u* and *ū* are added to the letter र् *r* thus—रु *ru*, रू *rū*.

र् के साथ उ और ऊ स्वर इस प्रकार जोड़े जाते हैं—रु, रू ।

When two or more consonants meet without the intervention of a vowel, they coalesce and become one conjunct character. These compounds are formed by writing the subsequent consonant under the first, by blending them in a particular way, or by writing them in their usual order, omitting the perpendicular stroke of each letter except the last.

जब दो या अधिक व्यञ्जन मिलते हैं और उनके बीच कोई स्वर नहीं होता तो वे मिलकर एक संयुक्त व्यञ्जन बन जाते हैं । इन संयुक्त रूपों को पहले वाले व्यञ्जन के नीचे बाद वाले व्यञ्जन को लिखकर, उन्हें एक खास ढंग से एकसाथ मिलाकर अथवा अन्तिम व्यञ्जन के अतिरिक्त पूर्व के व्यञ्जनों की आखिरी खड़ी रेखा का लोप करते हुए उन्हें उनके सामान्यक्रम में लिखकर बनाया जाता है ।

The letter र् *r*, when it immediately precedes a consonant, is written above it, in the form of a crescent, thus—र्ग *rga* ; when it immediately follows one, it is written as a slanting line beneath it, thus क्र *kra*, ग्र *gra*.

जब 'र्' वर्ण किसी व्यञ्जन के ठीक पहले आता है तो इसे उस व्यञ्जन के ऊपर अर्धचन्द्र के रूप में इस प्रकार लिखा जाता है—र्ग; जब यह किसी व्यञ्जन के तत्काल बाद आता है तो यह उस व्यञ्जन के नीचे एक तिरछी रेखा के रूप में इस प्रकार लिखा जाता है-क्र, ग्र ।

The following are among the most frequently recurring of the

CONJUNCT CONSONANTS

निम्नलिखित बहुशः प्रयुक्त होने वाले संयुक्त व्यञ्जन हैं :—

क्त *kta*, क्व *kva*, क्त्व *ktva*, क्ष *kṣa*, क्ष्य *kṣya*, क्ष्व *kṣva*

ख्य *khya*, ग्र *gra*, ग्र्य *grya*, घ्न *ghna*, ङ्क *ṅka*, ङ्ग *ṅga*
च्च *cca*, च्छ *ccha*, ज्ज *jja*, ज्ञ *jña**, ज्य *jya*, ज्र *jra*,
ञ्च *ñca*, ण्ट *ṇṭa*, त्त *tta*, त्न *tna*, त्र्य *trya*, त्व *tva*,
द्द *dda*, द्ध *ddha*, द्भ *dbha*, द्भ्य *dbhya*, द्य *dya*, द्र *dra*,
ध्व *dhva*, न्त्य *ntya*, न्त्र *ntra*, प्त *pta*, भ्य *bhya*, श्च *śca*,
श्र *śra*, ष्ट *ṣṭa*, स्त *sta*, स्त्र *stra*, स्थ *stha*, स्य *sya*,
ह्न *hna*, ह्म *hma*, ह्य *hya*, ह्र *hra*.

Lesson 1. पाठ १

1. A Sanskrit noun, as it stands in the dictionary, is said to be in the *crude form.*

संस्कृत का संज्ञा शब्द जिस रूप में शब्दकोश में होता है उसे प्रातिपदिक या असिद्ध रूप में स्थित कहते हैं।

2. Nouns in the crude form, end either in a vowel, or in a consonant.

प्रातिपदिक की अवस्था में संज्ञा शब्दों का अन्त या तो स्वर से होता है या व्यञ्जन से।

3. The vowels with which most nouns end are अ *a*, आ *â*, इ *i*, ई *î*, उ *u*, and ऋ *ṛ*.

अधिकांश संज्ञाओं के अन्त में आने वाले स्वर हैं :—अ, आ, इ, ई, उ तथा ऋ।

4. Nouns are *Masculine, Feminine, Neuter,* Name of males are masculine, and those of females feminine; but many words are masculine or feminime, which are names neither of males nor of females. For example,

* Commonly pronounced *gya* or even *dyña.*
सामान्यतः इसका उच्चारण 'ग्य' या द्य्ञ की तरह भी किया जाता है।

रथ *ratha* 'a car' is masculine; and चिन्ता *cintâ* 'reflection' is feminine.

संज्ञा शब्द पुंल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग, नपुंसकलिङ्ग होते हैं। पुरुषों के नाम पुंल्लिङ्ग और स्त्रियों के नाम स्त्रीलिङ्ग होते हैं; किन्तु बहुत से ऐसे शब्द भी पुल्लिङ्ग या स्त्रीलिङ्ग होते हैं जो न तो पुरुषों के नाम हैं और न स्त्रियों के। उदाहरण के लिए 'रथ' पुल्लिङ्ग है और 'चिन्ता' स्त्रीलिङ्ग।

5. By adding to, or otherwise changing the crude form of the noun, seven different forms, with different senses, are obtained. These altered forms are called *cases.*

संज्ञा के प्रातिपदिक रूप के साथ प्रत्यय जोड़कर या उनमें परिवर्तन करके सात विभिन्न अर्थ देने वाले सात प्रकार के रूप बनते हैं। इन परिवर्तित रूपों को कारक कहते हैं।

6. The 1 st case is that in which a noun appears when it denotes the *subject* spoken of in the sentence. This case is called the *Subjective*, or, more commonly, the *Nominative,* case.

प्रथम कारक वह होता है जिसमें संज्ञा शब्द वाक्य में उक्त कर्त्ता का बोधक होता है। इस कारक को कर्तृप्रधान या अधिक प्रचलित रूप में कर्त्ता कारक कहते हैं।

7. Words which, in the *crude form,* end in the vowels set down in N0. 3, commonly make the Nominative by altering the terminations thus:—

जिस शब्दों के प्रातिपदिक रूप के अन्त में ऊपर ३ के अन्तर्गत दिये गये स्वर आते हैं उनके प्रायः इस प्रकार विभक्ति के प्रत्यय को परिवर्तित करके कर्त्ता के रूप बनते हैं :—

अ *a* becomes, in the Nominative, अः *aḥ*.
इ *i* —— —— इः *iḥ*.
ई *ī* —— —— ईः *īḥ*.
उ *u* —— —— उः *uḥ*.
ऋ *ṛ* —— —— आ *ā*.

N. B.—*Neuter* nouns ending in अ *a* make the Nominative in अं *aṁ*.

द्रष्टव्य—जिन नपुंसकलिङ्ग संज्ञाओं के अन्त में 'अ' होता है उनका कर्त्ता में 'अं' हो जाता है।

Exercise 1. अभ्यास १

8. Write down the Nominative case of each of the following words both in Devanāgarī & English character

८. निम्नलिखित शब्दों का कर्त्ता कारक का रूप लिखो :—

VOCABULARY I शब्दावली १

अश्व (घोड़ा) *aśva* a horse.
इच्छा (विचार) *icchā* wish.
आसन [नपु०*] (बैठने का आसन) *āsana* (n.*) a seat.
अग्नि (आग) *agni* fire.
काक (कौआ) *kāka* a crow.
माला (माला) *mālā* garland.
श्री (समृद्धि) *śrī* prosperity.
गुण (विशेषता) *guṇa* a quality.
पितृ (पिता) *pitṛ* a father.
वचन [नपु०*] (बोली) *vacana* (n.) speech.

* The letter 'n' indicates that the word is Neuter.
नपु० नपुंसकलिङ्ग

चन्द्र (चन्द्रमा) *candra* the moon.
देव (देवता) *deva* a god.
पूजा (पूजा) *pūjā* worship.
गृह [नपुं०] (घर) *gṛha* (n.) a house.
धर्म (पुण्य) *dharma* merit.
वीणा (वीणा) *vīṇā* a lute.
बुद्धि (समझ) *buddhi* understanding.
गुरु (उपदेशक) *guru* preceptor.
जल (पानी) *jala* (n.) water.
फल (फल) *phala* (n) fruit.
रावण (रावण) *rāvaṇa* Rāvaṇa.
वृक्ष (पेड़) *vṛkṣa* a tree.
बक (बगुला) *baka* a crane.
दुःख (दुःख) *duḥkha* (n.) pain.
शत्रु (शत्रु) *śatru* an enemy.
सभा (सभा) *sabhā* an assembly.
कर्त्तृ (करनेवाला) *karttṛ* a doer.
शिष्य (शिष्य) *śiṣya* a disciple.
शृगाल (सियार) *śṛgāla* a jackal.
कुल (परिवार) *kula* (n.) a family.
वन [पु०] (वन) *vana* (n.) a wood.
मातृ (माता) *mātṛ* a mother.
पर्व्वत (पहाड़) *parvvata* a mountain.
मध्य (बीच) *madhya* the midst.
हिंसा (चोट) *hiṁsā* injury
पत्र [नपुं०] (पत्र) *patra* (n.) a leaf.
पति (स्वामी) *pati* a master.
धातृ (रचना करने वाला) *dhātṛ* a creator.

पान्थ (पथिक) *pāntha* a traveller.
ब्राह्मण (ब्राह्मण) *brāhmaṇa* a Brahman.
तीर [नपुं०] (तट) *tīra* (n.) a shore.
नर (पुरुष) *nara* a man.
पुत्र (बेटा) *putra* a son.
धन [नपुं०] (सम्पत्ति) *dhana* (n.) wealth.
मृग (हिरण) *mṛga* a deer.
अन्न [नपुं०] (अनाज) *anna* (n.) food.
हरि (विष्णु) *hari* Vishnu.
क्रोध (क्रोध) *krodha* anger.
बाण (तीर) *bāṇa* an arrow.
चक्र [नपुं०] पहिया *cakra* (n.) a wheel.
मस्तक (सिर) *mastaka* (n.) the head.
प्रभु (स्वामी) *prabhu* lord.
शक्ति (बल) *śakti* power.
सर्प (साँप) *sarpa* a snake.
भक्त (पूजक) *bhakta* a devotee.
दुहितृ (पुत्री) *duhitṛ*
समुद्र (समुद्र) *samudra* the ocean.
पुस्तक [नपुं०] (पुस्तक) *pustaka* (n.) a book
कन्या (लड़की) *kanyā* a girl.
व्याघ्र (बाघ) *vyāghra* a tiger.
दातृ (देनेवाला) *dātṛ* a giver.
हस्त (हाथ) *hasta* the hand.
राम (राम) *rāma* Rama.
शास्त्र [नपुं०] शास्त्र *śāstra* (n.) a scripture.
भूमि (पृथ्वी) *bhūmi* the ground.
कपि (बन्दर) *kapi* a monkey.

हुत [नपुं०] (यज्ञ) *huta* (n.) a sacrifice.
पुष्प [नपुं०] (फूल) (n.) a flower.
कवि (कवि) *kavi* a poet.
ग्राम (गाँव) *grāma* a village.
क्रिया (कार्य) *kriyā* action.
रुचि (पसन्द) *ruci* relish.
पातक [नपुं०] (पाप) *pātaka* (n.) sin.
विद्या (ज्ञान) *vidyā* knowledge.
मूषिक (चूहा) *mūṣika* a mouse.
चौर (चोर) *caura* a thief.
बाल (बालक) *bāla* a boy.
मालिक (माली) *mālika* a gardener.
आराम (उपवन) *ārāma* a garden.
तारा (नक्षत्र) *tārā* a star.

Lesson 2. पाठ २

9. Some final consonants, in the formation of the Nominative case, are changed thus :—

च् *c* or श् *ś* becomes———क् *k*. न् *n* is dropped, and preceding vowel (if the word is not neuter) is lengthened. र् *r* is changed to *visarga*, and the vowel is lengthened.

कर्त्ताकारक बनाने में कुछ अन्तिम व्यञ्जनों को इस प्रकार परिवर्तित कर दिया जाता है :—

च् या श्—क् हो जाता है। न् का लोप हो जाता है और उसके पहले आने वाले स्वर को (यदि शब्द नपुंसकलिङ्ग में न हो तो) दीर्घ

कर दिया जाता है। र् को विसर्ग कर दिया जाता है और स्वर को दीर्घ कर दिया जाता है।

10. An aspirated letter is changed to the corresponding unaspirated letter.

महाप्राण वर्ण को उसके समरूप अमहाप्राण वर्ण में बदल दिया जाता है।

11. Some final consonants undergo no change.
अन्त में आने वाले कुछ व्यञ्जनों में कोई परिवर्तन नहीं होता।

Exercise 2. अभ्यास २

12. Write down the Nominative case of each of the following words in Devanāgarī and English characters.

निम्नलिखित शब्दों के कर्त्ता कारक के रूप लिखो :—

VOCABULARY 2. शब्दावली २

वाच् (वाणी) *vāc* a word.
राजन् (राजा) *rājan* a king.
हस्तिन् (हाथी) *hastin* an elephant.
गिर् (शब्द) *gir* a word.
जगत् (संसार) *jagat* the world.
दिश् (दिशा) *diś* a side, direction.
आत्मन् (आत्मा) *ātman* soul.
विद्युत् (बिजली) *vidyut* lightning.
नामन् [नपुं०] (नाम) *nāman* (n.) a name.
चित्रलिख् (चित्रकार) *citralikh* a painter.

Lesson 3. पाठ ३

13. A Sanskrit verb, as it stands in the dictionary, appears in the form called the *root*.

संस्कृत क्रिया जिस रूप में शब्दकोश में होती है उसे 'धातु' रूप में कहते हैं।

14. To make the 3d person singular of the present tense, the syllable ति *ti* is subjoined to the root. Thus, the example, from the root अस् *as*, 'to be' is formed अस्ति *asti* 'he is'.

वर्तमान काल के प्रथमपुरुष एकवचन का रूप बनाने के लिए धातु में 'ति' अक्षर जोड़ जाता है। इस प्रकार उदाहरणार्थ 'अस्' होना अर्थ की धातु से 'अस्ति' (वह है) रूप होगा।

15. When such a termination as *ti* (N0. 14) is subjoined, the root generally requires to undergo some change. According to the nature of this change, roots are divided into *ten classes* or *conjugations*.

जब 'ति' (नियम १४) जैसा कोई प्रत्यय जोड़ा जाता है तो सामान्यतः धातु में कुछ परिवर्तन आवश्यक हो जाता है। इस परिवर्तन के स्वरूप के अनुसार धातुओं को दस वर्गों या गणों में बाँटा गया है।

16. Roots of the 1st conjugation interpose the short vowel अ *a* between the final and such a termination as *ti* (N0. 14), and change a final simple vowel* in the root into its corresponding *improper diphthong*.

प्रथम गण की धातुओं में अन्तिम वर्ण और 'ति' (नियम १४) जैसे प्रत्यय के बीच ह्रस्व 'अ' जोड़ा जाता है और धातु के अन्म में

* Or a short vowel when a consonant follows.

आने वाले सरल स्वर * को उसके समान संयुक्त स्वर में बदल दिया जाता है।

17. The *improper diphthongs*, or *guṇa* substitutes for the vowels are the following :—

स्वरों के लिये संयुक्त स्वर या गुण के आदेश ये हैं :—

of इ *i* or ई *ī* the *guṇa* substitute is ए *e*.
— उ *u* or ऊ *ū* — — ओ *o*.
— ऋ *ṛ* or ॠ *ṝ* — — अर् *ar*.

इ या ई का गुण आदेश ए होता है।
—उ या ऊ „ „ „ ओ „ „
—ऋ या ॠ „ „ „ अर् „ „

18. The improper diphthong ए is changed to अय् *ay*, and ओ *o* to अव् *av* when a vowel follows.

जब बाद में कोई स्वर आता है तो संयुक्त स्वर 'ए' को 'अय्' तथा 'ओ' को 'अव्' हो जाता है।

Exercise 3. अभ्यास ३

19. Write down the 3rd person singular present tense of each of the following verbs of the 1st conjugation, both in Devanāgarī and English letters, with the meaning in English.

इन प्रथम गण की धातुओं में प्रत्येक के वर्तमान काल में प्रथम पुरुष (थर्ड परसन) एकवचन के रूप अर्थसहित लिखो :—

VOCABULARY 3. शब्दावली ३

भू (होना) *bhū* to become.

अट् (घूमना) *aṭ* to rove.

---

* अथवा जब बाद में व्यञ्जन आवे तो ह्रस्व स्वर।

अर्ह् (योग्य होना) *arh* to be fit.
क्षि (नष्ट होना) *kṣi* to decay.
चर् (चलना) *car* to go.
वद् (बोलना) *vad* to speak.
वस् (रहना) *vas* to dwell.
वह् (ढोना) *vah* to carry.
शुच् (शोककरना) *śuc* to sorrow for.
श्रि (सेवा करना) *śri* to serve.
जि (जीतना) *ji* to conquer
तृ (पार करना) *tṛ* to cross over.
त्यज् (छोड़ना) *tyaj* to abandon.
दह् (जलाना) *dah* to burn.
द्रु (चूना) *dru* to ooze.
पच् (पकाना) *pac* to cook.
पत् (गिरना) *pat* to fall.
फल् (फलना) *phal* to bear fruit.
बुध् (जानना) *budh* to know.
सृ (जाना) *sṛ* to go.
सृप् (सरकना) *sṛp* to creep.
स्मृ (याद करना) *smṛ* to remember.
हस् (हँसना) *has* to laugh.
हृ (लेना) *hṛ* to take.
खन् (खोदना) *khan* to dig.
व्रज् (जाना) *vraj* to go.
जल्प् (बड़बड़ाना) *jalp* to prate.
चल् (चलना) *cal* to move.
भ्रम् (घूमना) *bhram* to wander.

Example. The root of भू *bhū*, by No. 16, becomes भो *bho*; and the vowel अ is to be interposed between this and the termination ति *ti* (No. 14)—so that we have *bho* + *a* + *ti*;—and then the *o* being changed to *av* by No 18—we have भवति *bhavati* 'he becomes.'

उदाहरण 'भू' धातु को नियम १६ द्वारा 'भो' होगा और इसके तथा 'ति' प्रत्यय (नियम १४) के बीच 'अ' स्वर रखा जायगा—इससे भो + अ + ति बनेगा—तब नियम १८ द्वारा 'ओ' को 'अव्' में बदल देने पर—'भवति' रूप होगा, जिसका अर्थ हो 'वह होता है'।

Lesson 4. पाठ ४

20. When one Sanskrit word immediately follows another, some change often takes place in the two letters thus brought together.

जब संस्कृत का एक शब्द दूसरे शब्द के तत्काल बाद आता है तो इस प्रकार एक साथ मिलने वाले दो वर्णों में प्रायः कुछ परिवर्तन होता है।

21. If the former of two words placed next to each other ends in अः *aḥ*, and the other begins with a *soft** *consonant* the अः *aḥ* is changed to ओ *o*. For example, देवः *devaḥ*, the nominative singular (No. 8) of देव *deva* 'a god', is placed before वदति *vadati*, the 3d person singular present tense (No. 19) of वद् *vad* 'to speak'—the two are written thus—देवो वदति *devo vadati* 'the god speaks'.

---

* The *soft* consonants are *ga, gha; ja, jha, ḍa; ḍha; da, dha; ba, bha;* the nasals, the semivowels, and *ha.*

यदि एक साथ रखे गये दो शब्दों में पहले शब्द के अन्त में 'अः' आता है और दूसरा शब्द किसी मृदु * व्यञ्जन से प्रारम्भ होता है तो 'अः' को 'ओ' में बदल दिया जाता है। उदाहरण के लिए 'देव' अर्थात् देवता शब्द का कर्त्ता का एकवचन (नियम ८) का रूप 'देवः' 'वद्' बोलना धातु के वर्तमान काल के प्रथम पुरुष (अन्य पुरुष) एकवचन के रूप 'वदति' के पहले आता है तो इन दोनों को इस प्रकार लिखा जाता है—'देवो वदति' देवता बोलता है।

Exercise 4. **अभ्यास ४**

22. Write the following phrases in Sanskrit, both in Devanāgarī and English letters, taking the words from Vocabularies 1 and 3, and paying attention to the rule—No 21.

The crane wanders. The Brāhmaṇ cooks. The god laughs. The jackal dwells. The quality becomes. The horse carries. The traveller knows. The tree falls. The man prates. The leaf decays. The daughter abandons. The father crosses over. The mouse digs. The water oozes. The mother speaks. The girl serves.

शब्दावली १ और ३ से शब्द लेकर तथा नियम २१ का ध्यान रखते हुए इन वाक्यों को संस्कृत में लिखो :—

बगुला घूमता है। ब्राह्मण पकाता है। देव हँसता है। सियार रहता है। गुण होता है। घोड़ा ढोता है। राही जानता है। पेड़ गिरता है। पुरुष बड़बड़ाता है। पत्ता नष्ट होता है। पुत्री छोड़ती है। पिता पार करता है। चूहा खोदता है। पानी चूता है। माता बोलती है। लड़की सेवा करती है।

* मृदु व्यञ्जन हैं ग, घ; ज, झ; ड, ढ; द, ध; ब, भ; अनुनासिक, अन्तःस्थ वर्ण और ह।

23. Write down the meaning, in English, of the following phrases :—

निम्नलिखित वाक्यों का अर्थ लिखो :—

रामो जयति। शृगालो हरति। रावणो व्रजति। पुत्रः स्मरति। वृक्षः फलति। देवो वदति। नरोवदति। नरो बोधति। पत्रं चलति। ब्राह्मणो भ्रमति। मृगो वसति। पान्थो जल्पति। माता हसति।

Lesson 5. पाठ ५

24. If the former of two words placed next to each other ends in *visarga*, and the other begins with any hard* *consonant* (except a guttural, a labial, or a sibilant —before which the termination may remain unchanged—) the *visarga* is changed to a *sibilant*. For example, when the word तरति *tarati* comes afetr the word ब्राह्मणः *brāhmaṇaḥ*, the two are written thus— ब्राह्मणस्तरति *brāhmaṇas-tarati* 'the Brāhman crosses over.'

यदि एक साथ रखे गये दो शब्दों में पहले शब्द के अन्त में विसर्ग आता है और दूसरा शब्द किसी कठोर† व्यञ्जन से (कण्ठ्य, ओष्ठ्य या उष्म को छोड़कर—जिसके पहले आने वाला अन्तिम अक्षर अपरिवर्तित भी रह सकता है) प्रारम्भ होता हो, तो विसर्ग को उष्म वर्ण में बदल देते हैं। उदाहरण के लिए जब 'तरति' शब्द 'ब्राह्मणः' शब्द के बाद आता है तो इन दोनों को इस प्रकार लिखते हैं— 'ब्राह्मणस्तरति' अर्थात् ब्राह्मण पार करता है'।

---

* The *hard* consonants are *ka, kha*; *ca, cha; ṭa, ṭha; ta, tha*; *pa, pha*; and the sibilants.

† कठोर व्यञ्जन हैं :—क, ख; च, छ; ट, ठ; त, थ; प, फ; तथा उष्म वर्ण। 'श' तालव्य उष्म वर्ण है, 'ष' मूर्धन्य तथा 'स' दन्त्य ॥

25. A sibilant † must be of the same class as the consonant with which it coalesces—that is to say, श् *ś* is the sibilant when a *palatal*, such as च *ca*, follows; and ष् *ṣ* when a *cerebral* such as ट *ṭa*, follows.

ऊष्मवर्ण* उसी वर्ग का होना चाहिए जिस वर्ग का उसके साथ संयुक्त होने वाला व्यञ्जन—तात्पर्य यह है कि जब कोई तालव्य वर्ण यथा 'च' बाद में आवे तो 'श्' ऊष्म वर्ण और जब कोई मूर्धन्य वर्ण यथा ट बाद में आवे तो ष् ऊष्म वर्ण होता है।

Exrcise 5. अभ्यास ५

26—Write down, in Sanskrit, the following phrases taking the words from Vocabularies I and 3.

The devotee crosses over. The tree moves. The Brāhmaṇ abandons. The jackal creeps. The son remembers.

शब्दावली १ और ३ से शब्द लेकर निम्नलिखित वाक्यों को संस्कृत में लिखो :—

भक्त पार करता है। पेड़ चलता है। ब्राह्मण छोड़ता है। सियार सरकता है। पुत्र याद करता है।

27—Write down the meaning, in English, of the following phrases :—

निम्नलिखित वाक्यों का अर्थ लिखो :—

मृगः सरति। शृगालश्चरति। रामः स्मरति। पुत्रः पचति। अश्वः पतति। रावणस्त्यजति। पान्थश्चरति। नरः श्रयति। वृक्षः क्षयति।

* श is the palatal sibilant, ष the cerebral, and स the dental. श तालव्य है, ष मूर्धन्य और स दन्त्य।

Lesson 6. पाठ ६

28 The 3d person singular 2d future ends in स्यति *syati* or इष्यति *iṣyati.* Thus the verb भू *bhū,* which makes भवति in the present, makes भविष्यति *bhaviṣyati* 'he will become.'

दूसरे भविष्यत् काल के प्रथम पुरुष (अन्य पुरुष) के रूप के अन्त में 'स्यति' या 'इष्यति' आता है। इस प्रकार 'भू' क्रिया से जिसका वर्तमान में 'भवति' रूप होता है, 'भविष्यति' (वह होगा) रूप बनता है।

Exercise 6. अभ्यास ६

29. Write the following phrases in Sanskrit :—

The horse will fall. The Brāhmaṇ will speak. The son will wander. The tree will bear fruit. The man will remember. The jackal will take. The Brāhmaṇ will know. Rāma will laugh. The horse will go. Rāvaṇa will cross over. Rāma will conquer.

निम्नलिखित वाक्यों को संस्कृत में लिखो :—

घोड़ा गिरेगा। ब्राह्मण बोलेगा। पुत्र घूमेगा। पेड़ फलेगा। पुरुष याद करेगा। सियार लेगा। ब्राह्मण जानेगा। राम हँसेगा। घोड़ा जायगा। रावण पार करेगा। राम जीतेगा।

30. When the future is formed by स्यति *syati* (No. 28) some change often takes place in the final of the verb. The following list may be committed to memory :—

जब 'स्यति' जोड़कर (नियम २८) भविष्यत् काल का रूप बनाया जाता है तो क्रिया के अन्तिम अक्षर में प्रायः कुछ परिवर्तन होता है। नीचे दी गई सूची याद की जा सकती है :—

त्यक्ष्यति	*tyakṣyati*	'he will abandon.'	वह छोड़ेगा
धक्ष्यति	*dhakṣyati*	'he will burn.'	वह जलायेगा
द्रोष्यति	*droṣyati*	'it will ooze.'	यह चूएगा
पक्ष्यति	*pakṣyati*	'he will cook.'	वह पकायेगा
जेष्यति	*jeṣyati*	'he will conquer.'	वह जीतेगा
वत्स्यति	*vatsyati*	'he will dwell.'	वह रहेगा

Exercise 7. अभ्यास ७

31. Write down, in English, the meaning of the following phrases :—

निम्नलिखित वाक्यों का अर्थ लिखो :—

जलं द्रोष्यति। नरः पक्ष्यति। व्याघ्रो जेष्यति। नरो वत्स्यति। चोरस्त्यक्ष्यति। ब्राह्मणो भ्रमिष्यति। देवः स्मरिष्यति। काको हरिष्यति। पिता बोधिष्यति।

Lession 7. पाठ ७

32. The 2d case is that in which a noun appears when it is the *object* of a transitive verb. The case is called the *Objective*, or more commonly, the *Accusative* case.

दूसरा कारक वह होता है जिसमें संज्ञा शब्द किसी सकर्मक क्रिया के कर्म के रूप में होता है। इस कारक को कर्म कारक कहते हैं।

33. A transitive verb is one which gives no *complete* meaning, till some person or thing is mentioned, *to whom or to which* the action was done.

Rāma killed—(killed whom ?) Rāvaṇa.

सकर्मक क्रिया वह होती है जो उस समय तक कोई पूरा अर्थ नहीं देती जब तक किसी ऐसे व्यक्ति या वस्तु का उल्लेख नहीं होता जिसके प्रति कार्य किया गया होता है।

राम ने (किसको मारा ?) रावण को मारा।

34. The following are the accusative singular endings of nouns that end in a vowel :—

अ	*a*	becomes	अं	*aṁ*.
आ	*ā*	——	आं	*āṁ*
इ	*i*	——	इं	*iṁ*
ई	*ī*	——	ईं	*īṁ*
उ	*u*	——	उं	*uṁ*

ऋ *ṛ*-(in some words) अरं *araṁ*, (in others) आरं *āraṁ*.

निम्नलिखित स्वरान्त संज्ञाओं के कर्मकारक, एकवचन के रूप में लगने वाले प्रत्यय हैं :—

अ	—	अं	हो जाता है।
आ	—	आं	,, ,, ,,
इ	—	इं	,, ,, ,,
ई	—	ईं	,, ,, ,,
उ	—	उं	,, ,, ,,

ऋ (कुछ शब्दों में) अरं और (कुछ शब्दों में) आरं हो जाता है।

35. The *anusvāra*, when followed by a vowel, takes the form of म् *m*. When followed by a consonant of the five classes, the guttural, &c., it optionally takes the form as well as the sound of the nasal belonging to the same class. Otherwise it remains unchanged. Thus अन्नं वहति *annaṁ vahati* 'he carries the food'—अन्नम्प-

चति *annam pacati* 'he cooks the food'—अन्नन्त्यजति *annan tyajati* 'he abandons the food.'

जब अनुस्वार के बाद कोई स्वर आता है तो अनुस्वार को 'म्' हो जाता है। जब उसके बाद कण्ठ्य आदि पाँच वर्गों का कोई व्यञ्जन आता है तो विकल्प से यह रूप होता है और यह उस वर्ग का अनुनासिक वर्ण हो जाता है; अन्यथा अपरिवर्तित बना रहता है। इस प्रकार 'अन्नं वहति' वह अन्न ले जाता है 'अन्नम्पचति' वह अन्न पकाता है—'अन्नन्त्यजति' वह अन्न छोड़ता है।

Observe that the accusative is generally placed before the verb, as in the examples just given.

ध्यान दो कि सामान्यतः कर्म क्रिया के पहले रखा जाता है जैसा कि अभी दिये गये उदाहरणों में।

Exercise 8. अभ्यास ८

36. Write down, in English, the meaning of the follwing phrases :—

निम्नलिखित वाक्यों का अर्थ लिखो :—

अन्नम्पचति नरः। गृहन्त्यजति पुत्रः। शास्त्रं स्मरति ब्राह्मणः। पुत्रो बोधति पितरम्। सभान्त्यजति रावणः। शत्रुं जयति रामः। मातरं स्मरति नरः। हरिं स्मरिष्यति ब्राह्मणः।

Exercise 9. अभ्यास ९

37. Put into Sanskrit the following phrases :—

The father knows (his) son. The Brāhmaṇ will remember the scripture. Rama will abandon the house. The car carries the man. The son will cook the food. The devotee will know the god. The crane will cross

the water. The mouse will dig the ground. The son will serve the father

निम्नलिखित वाक्यों को संस्कृत में लिखो :—

पिता (अपने) पुत्र को जानता है। ब्राह्मण शास्त्र को याद करेगा। राम घर छोड़ेगा। रथ पुरुष को ढोता है। पुत्र अन्न पकाएगा। भक्त देव को जानेगा। बगुला जल को पार करेगा। चूहा धरती को खोदेगा। पुत्र पिता की सेवा करेगा।

Lesson 8. पाठ ८

38. Some useful verbs of the lst conjugation form the present and some of the other tenses irregularly. The following roots, with their 3d person singular present, may be committed to memory :—

प्रथम गण की कुछ उपयोगी क्रियाओं के वर्तमान काल तथा कुछ दूसरे कालों में भी अनियमित रूप बनते हैं। निम्नलिखित धातुओं को, उनके वर्तमान काल प्रथम पुरुष (अन्य पुरुष) एकवचन के रूप के साथ याद किया जा सकता है :—

क्रम्	*kram*	makes	क्रामति	*krāmati*	'he walks.'	वह चलता है
गम्	*gam*	—	गच्छति	*gacchati*	'he goes.'	वह जाता है
गुप्	*gup*	—	गोपायति	*gopāyati*	'he protects.'	वह रक्षा करता है
घ्रा	*ghrā*	—	जिघ्रति	*jighrati*	'he smells.'	वह सूँघता है
जीव्	*jīv*	—	जीवति	*jīvati*	'he lives.'	वह जीता है
दा	*dā*	—	यच्छति	*yacchati*	'he gives.'	वह देता है
दृश्	*dṛś*	—	पश्यति	*paśyati*	'he sees.'	वह देखता है
पा	*pā*	—	पिबति	*pibati*	'he drinks.'	वह पीता है
स्था	*sthā*	—	तिष्ठति	*tiṣṭhati*	'he stands.'	वह खड़ा होता है
श्रु	*śru*	—	शृणोति	*śṛṇoti*	'he hears.'	वह सुनता है

39. When the 3d person singular ends in अति *ati*, the 3d person plural ends in अन्ति *anti*. Thus भवन्ति *bhavanti* 'they become.'

जब प्रथम पुरुष एकवचन के अन्त में 'अति' आता है तो प्रथम पुरुष बहुवचन के अन्त में 'अन्ति' आता है—'भवन्ति' वे होते हैं।

40. The *negative* is न *na* 'not' :—as न भवति *na bhavati* 'he does not become;' न भवन्ति *na bhavanti* 'they do not become.'

निषेधवाचक शब्द 'न' (नहीं) है :—यथा, 'न भवति' वह नहीं होता है; 'न भवन्ति' वे नहीं होते हैं।

41. *Interrogatives* are किम् *kim* 'what'?—कुत्र *kutra* 'where'?—कदा *kadā* 'when'?—कुत: *kutaḥ* 'whence'?—किमर्थम् 'why'?—कथम् 'how'?—&c. Examples: किं वदति *kim vadati* 'what does he say'?—कुत्र वसति *kutra vasati* 'where does he dwell'? किमर्थम्पितरम्पुत्रो न स्मरति *kimartham pitaram putro na smarati* 'why does the son not remember the father'?

प्रश्नवाचक शब्द हैं 'किम्'—क्या ? 'कुत्र' कहाँ ? 'कदा'—कब ? 'कुतः'—कहाँ से ? 'किमर्थम्'—क्यों ? 'कथम्'—कैसे ? इत्यादि। उदाहरण :—किं वदति—वह क्या कहता है ? कुत्र वसति—वह कहाँ रहता है ?। किमर्थम्पितरम्पुत्रो न स्मरति—पुत्र पिता को क्यों नहीं याद करता है ?।

42. Verbs signifying *'to go to'* require the accusative of the place gone to, Ex. काशीं गच्छति *kāśīm gacchati* 'he goes to Kāśī (Banares).'

किसी स्थान को जाना अर्थ देने वाली क्रियायों के साथ जिस स्थान को जाया जाता है उस में कर्मकारक होता है। उदाहरण :—'काशीं गच्छति' काशी (वाराणसी) जाता है।

Exercise 10. अभ्यास १०

43. The son smells the flower. They go to Kāśī. The crow does not see the jackal. Rāma walks to the mountain. Why does the father not protect the son? The Brāhmaṇ drinks water. He gives the food. The devotee remebers the scripture.

पुत्र फूल सूँघता है। वे काशी जाते हैं। कौआ सियार को नहीं देखता है। राम पर्वत को जाते हैं। पिता पुत्र की रक्षा क्यों नहीं करता है? ब्राह्मण पानी पीता है। वह अन्न देता है। भक्त शास्त्र का स्मरण करता है।

Lesson 9. पाठ ५

44. The *Nominative plural* is frequently formed by changing the termination as follows :—

अ *a* or आ *ā* (masculine or feminine) becomes				आः *āḥ*.
अ *a* (neuter)			——	आनि *āni*
इ *i*	——	——	——	अयः *ayaḥ*
उ *u*	——	——	——	अवः *avaḥ*.
ऋ *ṛ*	——	——	अरः *araḥ* or	आरः *āraḥ*.

कर्त्ताकारक बहुवचन का रूप प्रायः इस प्रकार अन्तिम वर्ण को परिवर्तन करके बनाया जाता है :—

अ या आ (पुल्लिङ्ग या स्त्रीलिङ्ग)			आः होता है।
अ (नपुंसक)			आनि ,, ,,
इ	—	—	अयः ,, ,,
उ	—	—	अवः ,, ,,
ऋ	—	—	'अरः' या 'आरः' होता है।

45. When a soft consonant, or a vowel, comes after आः *āḥ*, the *visarga* is dropped. Ex. नराः *narāḥ* 'men' :—नरा वसन्ति *narā vasanti* 'men dwell' नरा अर्हन्ति *narā arhanti* 'the men are fit.'

जब कोई मृदु व्यञ्जन, या कोई स्वर 'आः' के बाद आता है तो विसर्ग का लोप हो जाता है। उदाहरण 'नराः' अर्थात् पुरुष—नरा वसन्ति 'पुरुष रहते हैं' नरा अर्हन्ति 'पुरुष योग्य हैं'।

Exercise 11. अभ्यास ११

49. The mice creep. The thieves take the food. The men laugh. The Brāhmaṇs will prate. The jackals drink water. When will the sons cook food ? The fathers do not see the flower. The men go to the shore. The Brāhmaṇs will not cross the sea. The flowers fall. What do the men say ?

चूहे रेंगते हैं। चोर अन्न लेते हैं। पुरुष हँसते हैं। ब्राह्मण बड़बड़ाते हैं। सियार पानी पीते हैं। पुत्र अन्न कब पकायेंगे ? पिता फूल नहीं देखते हैं। पुरुष समुद्रतट को जाते हैं। ब्राह्मण समुद्र को नहीं पार करेंगे। फूल गिरते हैं। पुरुष क्या कहते हैं।

किमर्थं नरा न वदन्ति। वृक्षाः पतिष्यन्ति। अन्नं पुत्राः पच्यन्ति। काकाः कुत्र गच्छन्ति। कन्या तीरं गच्छति। कवयो वदिष्यन्ति। पितरस्तीरं गच्छन्ति। वृक्षाः क्षयन्ति।

Lesson 10. पाठ १०

47. The *Accusative plural* is frequently formed by changing the termination as follows :—

अ *a*	becomes	आन् *ān*	इ *i*	becomes	ईन् *īn*
उ *u*	——	ऊन् *ūn*	ऋ *ṛ*	——	ॠन् *ṝn*.

कर्मकारक बहुवचन का रूप प्रायः, अन्तिम अक्षर को इस प्रकार परिवर्तित कर बनता है :—

अ — आन् हो जाता है। इ — ईन् हो जाता है।
उ — ऊन् ,, ,, ,,। ऋ — ॠन् ,, ,, ,,।

Ex. देवान् स्मरति *devān smarati* 'he remembers the gods' वह देवताओं को याद करता है। शत्रून् पश्यति *śatrūn paśyati* 'he sees the enemies.' वह शत्रुओं को देखता है।

Obs. A neuter word is always the same in the accusative as in the nominative.

ध्यानार्ह—नपुंसक लिङ्ग शब्द का कर्मकारक में सदैव वही रूप रहता है जो कर्त्ताकारक में होता है।

48. When a soft consonant or a vowel follows, then इः *iḥ* becomes इर् *ir;* and, in like manner, ईः *īḥ* becomes ईर् *īr ;* उः *uḥ* becomes उर् *ur*; एः *eḥ* becomes एर् *er;* ऐः *aiḥ* becomes ऐर् *air;* ओः *oḥ* becomes ओर् *or*; and औः *auḥ* becomes और् *aur*. Ex. कविर्वदति *kavir vadati* 'the poet says.'

जब कोई मृदु व्यञ्जन या स्वर बाद में आता है तो 'इः' को इर्' तथा इसी प्रकार 'ईः' को 'ईर्' 'उः' को 'उर्'; 'ऊः' को 'ऊर्' 'एः' को 'एर्'; 'ऐः' को 'ऐर्'; 'ओः' को 'ओर्' तथा 'औः' को 'और्' हो जाता है। उदाहरण—कविर्वदति—कवि कहता है।

Exercise 12. अभ्यास १२

49. The crows see the jackals. The jackals do not see the crows. Rāma sees (his) enemies. The sons protect (their) fathers. Why do the sons not protect (their) fathers? Rāma protects the monkeys. The

fathers sorrow for (their) sons. The Brāhmaṇs remember the scriptures. The boys smell the flowers. When do the men go to the villages ?

कौए सियारों को देखते हैं। सियार कौओं को नहीं देखते हैं। राम (अपने) शत्रुओं को देखता है। पुत्र (अपने) पिताओं की रक्षा करते हैं। पुत्र (अपने) पिताओं की रक्षा क्यों नहीं करते हैं ? राम बन्दरों की रक्षा करता है। पिता (अपने) पुत्रों के लिए शोक करते हैं। ब्राह्मण शास्त्रों का स्मरण करते हैं। लड़के फूलों को सूँघते हैं। लोग गाँवों को क्यों जाते हैं।

पुत्राः कथं शास्त्राणि स्मरिष्यन्ति। पितॄन कदा गोपायिष्यन्ति पुत्राः। कुत्र गच्छन्ति शत्रवः। शृगालान् कथं न पश्यन्ति काकाः। अग्निर्वृक्षान् धक्ष्यति। गृहं गच्छन्ति ब्राह्मणाः। दुहिता पश्यति पितरम्। कविः सभां गच्छति। कुलं स्मरन्ति पितरः। तीरं गमिष्यन्ति बकाः। शत्रून् कुत्र पश्यति रामः। शत्रून् जेष्यति देवः। कुतो धनं हरन्ति चौराः।

Lesson 11. पाठ ११

50. The singular of the 3d, or *Instrumental*, case, is frequently formed by changing the termination as follows :—

तृतीय अथवा करणकारक का एकवचन का रूप प्रायः अन्तिम अक्षर को इस प्रकार बदल कर बनाया जाता है :—

अ *a*	becomes	एन *ena.*	इ *i*	becomes	इना *inā*
उ *u*	—	उना *unā*	ऋ *ṛ*	—	रा *rā.*

'अ' — 'एन' हो जाता है। 'इ' — 'इना' हो जा है।
उ — 'उना' „ „ „। ऋ — रा „ „ „।

Ex. हस्तेन हरति *hastena harati* 'he takes with the hand'–वह हाथ से लेता है। अग्निना दहति *agninā dahati* 'he burns with fire.' वह आग से जलाता है।

Exercise 13. अभ्यास १३

51. The men cook the food with fire. The Brāhmaṇ burns the sacrifice with fire. The son, with his hand, carries the flower. Rāvaṇa, with anger, sees the enemies. When does Rāvaṇa see the enemies with anger ? When will the man take the flower with his hand ? How will the deer cross over the water ? The son, by wealth, proctects (his) father. Men live by food.

पुरुष आग से अन्न पकाते हैं। ब्राह्मण आग से यज्ञ जलाता है। पुत्र अपने हाथ से फूल ले जाता है। रावण क्रोध से शत्रुओं को देखता है। रावण शत्रुओं को कब क्रोध से देखता है ? पुरुष कब अपने हाथ से फूल लेगा ? मृग कैसे पानी को पार करेगा ? पुत्र धन द्वारा (अपने) पिता की रक्षा करता है। लोग अन्न से जीते हैं।

Lesson 12. पाठ १२

52. The *indefinite past participle* generally ends in त *ta*, and, like an adjective ending in अ *a*, takes the three genders, thus :—

भूतकालिक कृदन्त शब्द के अन्त में सामान्य 'त' आता है और एक विशेष शब्द के समान अकारान्त होने से इसके तीनों लिङ्ग इस प्रकार होते हैं :—

	Masculine पुंलि०	*Feminine* स्त्री०	*Neuter* नपुं०
Sing. nom ए०व०कर्ता	तः *taḥ*	ता *tā*	तम् *tam*

53. The following list of past participles may be committed to memory :—

भूतकालिक कृदन्त शब्दों की निम्नलिखित सूची याद की जा सकती है :—

स्मृत	*smṛta*	remembered.	याद किया हुआ।
उक्त	*ukta*	said.	कहा हुआ।
त्यक्त	*tyakta*	abandoned.	छोड़ा हुआ।
हृत	*hṛta*	taken.	लिया गया।
जित	*jita*	conquered.	जीता गया।
गत	*gata*	gone.	गया हुआ।
दत्त	*datta*	given.	दिया गया।
दृष्ट	*dṛṣṭa*	seen.	देखा गया।
पतित	*patita*	fallen.	गिरा हुआ।
पीत	*pīta*	drunk.	पिया गया।
यत	*yata*	restrained.	रोका गया।
भूत	*bhūta*	been.	हुआ।
श्रुत	*śruta*	heard.	सुना हुआ।

Exercise 14. अभ्यास १४

54. Translate the following phrases :—

निम्नलिखित वाक्यों का अनुवाद करो :—

शास्त्रं ब्राह्मणेन स्मृतम्। पुत्रः पित्रा त्यक्तः। अन्नं हस्तेन हृतम्। रावणो रामेण जितः। नरो ग्रामं गतः। कन्या पित्रा दत्ता। धनं चौरेण दृष्टम्। जलं ब्राह्मणेन पीतम्। क्रोधो भक्तेन जितः

The son, abandoned by the father, goes to the village. Rāvaṇa, conquered by Rāma, will fall. The jackal, seen by the man, will abandon the village. The sons abandoned by the father, will wander. The crow, seen, by the jackal, drinks water.

पिता से छोड़ा गया पुत्र गाँव को जाता है। राम से जीता गया रावण गिर पड़ेगा। पुरुष से देखा गया सियार गाँव को छोड़ेगा।

पुत्र पिता से छोड़े जाकर घूमेंगे। सियार से देखा गया कौआ पानी पीता है।

Lesson 13. पाठ १३

55. The 2d preterite is distinguished by the reduplication of the root. The termination of the 3d person singular is अ *a;* but if the root ends in आ *ā*, the termination is औ *au*.

परोक्ष भूतकाल या लिट् लकार का यह विशेष चिह्न है कि उसमें धातु को द्वित्व होता है। प्रथमपुरुष (अन्यपु०) एकवचन का प्रत्यय 'अ' है किन्तु यदि धातु के अन्त में 'आ' होता है तो यह प्रत्यय 'औ' होता है।

56. In the reduplication of the root, a guttural is changed to a palatal–i.e., क् *k* or ख् *kh* is changed to च् *c*.

धातु का द्वित्व करने में कण्ठ्य वर्ण को तालव्य में बदल दिया जाता है—यथा 'क्' या 'ख्' को 'च्' में बदल देते हैं।

57. Other changes—many of them relating to single verbs—occur in the formation of this tense. At present the following example may be committed to memory :—

दूसरे परिवर्तन भी—जिनमें अधिकांश किसी विशिष्ट क्रियाओं से सम्बद्ध हैं—इस काल के रूप बनाने के होते हैं। सम्प्रति इन उदाहरणों को याद रखा जा सकता है :—

भू	*bhū*	makes	बभूव	*babhūva*	he became	वह हुआ
गम्	*gam*	—	जगाम	*jagāma*	he went	वह गया
चर्	*car*	—	चचार	*cacāra*	he went	वह चला
जि	*ji*	—	जिगाय	*jigāya*	he conquered.	उसने जीता

तॄ *tṝ* – ततार *tatāra* he crossed over. उसने पार किया
त्यज् *tyaj* – तत्याज *tatyāja* he abandoned. उसने छोड़ा
दा *dā* – ददौ *dadau* he gave. उसने दिया
दह् *dah* – ददाह *dadāha* he burned. उसने जलाया
दृश् *dṛś* – ददर्श *dadarśa* he saw. उसने देखा
द्रु *dru* – दुद्राव *dudrāva* it oozed. यह चूआ
पा *pā* – पपौ *papau* he drank. उसने पिया
पच् *pac* – पपाच *papāca* he cooked. उसने पकाया
पत् *pat* – पपात *papāta* he fell. वह गिरा
बुध् *budh*– बुबोध *bubodha* he knew. उसने जाना
भ्रम् *bhram*–बभ्राम *babhrāma* he wandered. वह भटका
वद् *vad* – उवाद *uvāda* he spoke. वह बोला
वस् *vas* – उवास *uvāsa* he dwelt. वह रहा
वह् *vah* – उवाह *uvāha* he carried. उसने ढोया
शुच् *śuc* – शुशोच *śuśoca* he sorrowed for उसने शोक किया
श्रि *śri* – शिश्राय *śiśrāya* he served. उसने सेवा की
श्रु *śru* – शुश्राव *śuśrāva* he heard उसने सुना
सृ *sṛ* – ससार *sasāra* he went. वह गया
सृप् *sṛp* – ससर्प *sasarpa* he crept. वह रेंगा
स्मृ *smṛ* – सस्मार *sasmāra* he remembered. उसने याद किया
स्रु *sru* – सुस्राव *susrāva* it dropped. वह गिरा
हस् *has* – जहास *jahāsa* he laughed. वह हँसा
हृ *hṛ* – जहार *jahāra* he took. उसने लिया

58. Translate the following phrases :—

निम्नलिखित वाक्यों का अनुवाद करो :—

रावणं जिगाय रामः। समुद्रं ततार कपिः। पुत्रस्तत्याज पितरम्। अन्नं किमर्थं न पपाच नरः। पुष्पं कुतः पपात। ब्राह्मणः शास्त्रं बुबोध।

नरः कुत्र बभ्राम। पिता पुत्रमुवाद। अश्वो नरमुवाह। जलं कुतः सुस्राव। नरो जलं पपौ। मृगो वनं चचार।

The horse fell. The man did not cross the ocean. The Brāhmaṇ remembered the scripture. The father, abandoned by the son, wandered. The jackal went to the shore. When did the boy laugh? He gave the food. The Brāhmaṇ heard the scripture. The girl served (her) mother. The fruit, taken by the hand, fell. The thief, seen by the man, crossed over the water. With anger, the enemy burnt the house.

घोड़ा गिरा। पुरुष ने समुद्र को पार नहीं किया। ब्राह्मण ने शास्त्र का स्मरण किया। पुत्र द्वारा छोड़ा गया पिता भटका। सियार समुद्र-तट पर गया। लड़का कब हँसा? उसने अन्न दिया। ब्राह्मण ने शास्त्र सुना। लड़की ने (अपनी) माँ की सेवा की। हाथ से लिया गया फल गिर पड़ा। पुरुष द्वारा देखे गये चोर ने पानी को पार किया। क्रोध से शत्रु ने घर जला दिया।

Lesson 14. पाठ १४

59. When an action succeeds another—as when "Rāma conquered Rāvaṇa, and went to his home"—the former action is commonly expressed by a participle called the *conjunctive,* which implies *having done* so and so.

जब एक कार्य दूसरे कार्य के बाद होता है—जैसे-"राम ने रावण को जीता और वह अपने घर गया" तो पहले होने वाले कार्य को सामान्यतः कृदन्त द्वारा व्यक्त करते हैं जिसे पूर्वकालिक या आनुषङ्गिक क्रिया कहते हैं और जिसका अर्थ होता है ऐसा करके।

60. The conjunctive participle ends in त्वा *tva.* Ex. रामो रावणं जित्वा गृहं जगाम *Rāmo, Ravaṇaṃ jitvā, gṛhaṃ*

jagāma 'Rāma, having conquered Rāvaṇa, went to his house (or home)'.

पूर्वकालिक क्रिया के कृदन्त के अन्त में 'त्वा' आता है उदाहरण— 'रामो रावणं जित्वा गृहं जगाम' राम रावण को जीतकर अपने घर गये ।

61. The following list of conjunctive participles may be committed to memory :—

पूर्वकालिक क्रिया के कृदन्तों की निम्नलिखित सूची याद की जा सकती है :—

भूत्वा	*bhūtvā*	having become.	होकर
त्यक्त्वा	*tyaktvā*	having abandoned.	छोड़कर
दत्त्वा	*dattvā*	having given.	देकर
हृत्वा	*hṛtvā*	having taken.	लेकर
पीत्वा	*pītvā*	having drunk.	पीकर
स्मृत्वा	*smṛtvā*	having remembered.	याद कर
गत्वा	*gatvā*	having gone.	जाकर
दृष्ट्वा	*dṛṣṭvā*	having seen.	देखकर
श्रुत्वा	*śrutvā*	having heard.	सुनकर
स्थित्वा	*sthitvā*	having stood.	खड़ा होकर

Exercise 16. अभ्यास १६

62. Translate the following phrases :—

The Brāhmaṇ having gone to the shore, drinks water. The son, having abandoned the father, will wander. The men, having seen the tree, will go to the village. The jackal, having drunk water, went to the shore. The son, having remembered the father, spoke.

निम्नलिखित वाक्यों का अनुवाद करें :—

ब्राह्मण तट पर जाकर पानी पीता है। पुत्र पिता को छोड़कर भटकेगा। पुरुष वृक्ष को देखकर गाँव को जायँगे। सियार जल पीकर समुद्रतट को गया। पुत्र पिता को यादकर बोला।

पुत्रः पित्रा त्यक्तो गृहं त्यक्त्वा भ्रमति। ब्राह्मणः शास्त्रं स्मृत्वा तीरं गत्वा जलं पपौ। मृगो नरं दृष्ट्वा चचार। नरः श्रुत्वा जहास। ब्राह्मणो जलं पीत्वा कुत्र गमिष्यति।

Lesson 15. पाठ १५

63. The following indeclinable words, including those given in No. 40 and 41, may be committed to memory.

निम्नलिखित अव्यय शब्दों तथा ४० और ४१ के अन्तर्गत दिये गये अव्ययों को याद कर लेना चाहिए।

Vocabulary 4 शब्दावली ४

अकस्मात्	*akasmāt*	unexpectedly.	अचानक
अत्र	*atra*	here.	यहाँ
अद्य	*adya*	to-day.	आज
अन्यत्र	*anyatra*	elsewhere.	दूसरी जगह
अतः	*ataḥ*	hence. [then]	इसलिए (तब)
अथ	*atha*	so, thus, well.	ऐसा, इस प्रकार, अच्छा
अधुना	*adhunā*	now.	अब
अन्यथा	*anyathā*	otherwise.	नहीं तो
इति	*iti*	so, thus.	ऐसा, इस प्रकार
इव	*iva*	like, as, so.	तरह, जैसा
एकत्र	*ekatra*	in one place.	एक जगह
एकधा	*ekadhā*	in one way	एक प्रकार से

एवम्	*evam*	thus.	इस प्रकार
द्विधा	*dvidhā*	in two ways.	दो प्रकार से
कदा	*kadā*	when ?	कब
किञ्च	*kiñca*	moreover.	इसके अतिरिक्त
किम्	*kim*	what ?	क्या ?
कुत्र	*kutra*	where	कहाँ
ततः	*tataḥ*	thence, after that.	तब, उसके बाद
तदा	*tadā*	then.	तब
तथाहि	*tathāhi*	thus.	इस प्रकार
न	*na*	not.	नहीं
प्रायः	*prāyaḥ*	mostly.	अधिकतर
यदा	*yadā*	when.	जब
सर्वत्र	*sarvatra*	everywhere.	सभी जगह
इदानीम्	*idānīm*	now.	इस समय
इह	*iha*	here.	यहाँ
एकदा	*ekadā*	at one time.	एक बार
एव	*eva*	also, only.	भी ही
कथम्	*katham*	how ?	कैसे
कदाचित्	*kadācit*	sometime.	कभी-कभी
किन्तु	*kintu*	but.	परन्तु
कुतः	*kutaḥ*	whence ?	कहाँ से
कुत्रचित्	*kutracit*	anywhere.	कहीं
तत्र	*tatra*	there.	वहाँ
तथा	*tathā*	thus, so.	इस प्रकार, ऐसा
तावत्	*tāvat*	so for, so much.	यहाँ तक, इतना
पुनर्	*punar*	again.	फिर
यथा	*yathā*	as.	जैसे
समीपे	*samīpe*	near to.	निकट

सर्वदा	*sarvadā*	always.	सदा
हि	*hi*	verily.	सचमुच

64. It will be observed, from the foregoing list, that the *interrogatives* begin with *k*, and the *relatives* with *y*. The termination of *time* is *dā*–as in तदा *tadā* 'then'; that of *place* is *tra*–as in तत्र *tatra* 'there',

इस सूची से यह देखा जायगा कि प्रश्नवाचक शब्द 'क्' से तथा संबन्धवाचक शब्द 'य्' से प्रारम्भ होते हैं। कालबोधक प्रत्यय 'दा' है—जैसे 'तदा' (तब) में; स्थानवाचक प्रत्यय 'त्र' है—जैसे 'तत्र' (वहाँ) में।

Lesson 16. पाठ १६

65. The 4th or *Dative* case; and 5th or *Ablative* case; of many words may be formed by the following substitutions.

बहुत से शब्दों से चतुर्थ या सम्प्रदान कारक अथवा पञ्चम या अपादान कारक निम्नलिखित प्रत्ययों का आदेश करके बनाया जाता है :—

			Sing. एकव०		*Plu.* बहुव०	
For final अ *a* अकारान्त के साथ	Dat.	(चतुर्थी)	आय	*āya*	एभ्यः	*ebhyaḥ.*
	Abl.	(पंचमी)	आत्	*āt*	एभ्यः	*ebhyaḥ.*
For final इ *i* इकारान्त के साथ	Dat.	(चतुर्थी)	अये	*aye*	इभ्यः	*ibhyaḥ.*
	Abl.	(पंचमी)	एः	*eh*	इभ्यः	*ibhyaḥ.*

Ex. रामाय *rāmāya* 'to Rāma'; राम को; रावणात् *rāvaṇāt* 'from Rāvaṇa' रावण से; नरेभ्यः *narebhyaḥ* 'to or from the

men' मनुष्यों को या मनुष्यों से; हरये *haraye* 'to Hari' हरि को, कवे: *kaveḥ* 'from the poet' कवि से; कविभ्य: *kavibhyaḥ* 'to or from the poets' कवियों को या कवियों से।

Exercise 17. अभ्यास १७

66. The father gave the book to the son. The girl goes from the house. Unexpectedly a flower fell from the tree. He gave wealth to the Brāhmaṇs. Rāvaṇa, from anger, will not speak. He took water from the ocean. Then the king gave wealth to the poets. The arrow will fall again.

पिता ने पुत्र को पुस्तक दी। लड़की घर से जाती है। अचानक पेड़ से एक फूल गिरा। उसने ब्राह्मणों को धन दिया। रावण क्रोध से नहीं बोलेगा। उसने समुद्र से जल लिया। तब राजा ने कवियों को धन दिया। बाण फिर नहीं गिरेगा।

अकस्मात् पुत्रस्तीरात् पपात। पिता दृष्ट्वा पुत्राय हस्तं ददौ। ततो गत्वा ब्राह्मणाय धनं यच्छति। फलं वृक्षात् पतितं दृष्ट्वा पिता पुत्राय ददौ। कथं जलं हरति समुद्रात्। समीपे स्थित्वा समुद्रात् जलं जहार।

Lesson 17. पाठ १७

67. The 6th or *Genitive* case; and the 7th or *Locative* case; of many words may be formed by the following substitutions.

बहुत से शब्दों से षष्ठ या सम्बन्ध पद तथा सप्तम या अधिकरण कारक; निम्नलिखित प्रत्ययों का आदेश करके बनाये जाते हैं :—

			Sing. एक व०		Plu. बहु व०	
For final अ *a* अकारान्त के साथ	Gen.	(षष्ठी)	अस्य	*asya*	आनां	*ānāṃ*.
	Loc.	(सप्तमी)	ए	*e*	एषु	*eṣu*.
For final इ *i* इकारान्त के साथ	Gen.	(षष्ठी)	एः	*eḥ*	ईनां	*īnāṃ*.
	Loc.	(सप्तमी)	औ	*au*	इषु	*iṣu*.

Ex रामस्य *rāmasya* 'of Rāma' राम का; समुद्रे *samudre* 'in the ocean' समुद्र में; तीरे *tīre* 'on the shore' तट पर; देवानां *devānāṁ* 'of the gods' देवताओं का; ग्रामेषु *grāmeṣu* 'in the villages' गाँवों में; हरेः *hareḥ* 'of Hari' हरि का; कवीनां *kavīnām* 'of the poets' कवियों का; अग्नौ *agnau* 'in the fire' अग्नि में; पतिषु *patiṣu* 'among the masters' स्वामियों में।

Exercise 18. अभ्यास १८

68. Rāma dwells in the wood. He saw the house of Rāvaṇa. He sees a garland of flowers in the hand of the Brāhmaṇ. Men dwell in houses. The family of the jackal dwells in the wood. He stands in the midst of the fires. He saw the crow on the shore of the sea. He sees the flower fallen into the fire.

राम बन में रहता है। उसने रावण का घर देखा। वह ब्राह्मण के हाथ में फूलों की एक माला देखता है। मनुष्य घरों में रहते हैं। सियार का परिवार वन में रहता है। वह अग्नियों के बीच में खड़ा है। उसने कौए को समुद्र के किनारे देखा। वह अग्नि में गिरे हुए फूल को देखता है।

वृक्षे काको वसति। कन्या समुद्रस्य तीरे स्थित्वा चन्द्रं पश्यति। आरामं गत्वा वृक्षात् पतितं दृष्ट्वा मालिकः शुशोच। बालः कवीनां मध्ये स्थित्वा वदति। काकानां मध्ये बको न वसति। कवेर्वचनं श्रुत्वा राजा हसति।

Lesson 18. पाठ १८

69. Adjectives, when declined, are declined like nouns. They are very commonly, however, prefixed in their crude from to the noun—and then they remain unaltered throughout the declension, forming a class of compounds termed *Karmadhāraya*. Thus the adjective कृष्ण *kṛṣṇa* 'black,' with the noun सर्प *sarpa* 'a snake,' may be written कृष्णः सर्पः *kṛṣṇaḥ sarpaḥ*, or कृष्णसर्पः *kṛṣṇasarpaḥ* 'a black snake'; and again कृष्णेन सर्पेण *kṛṣṇena sarpeṇa*, or कृष्णसर्पेण *kṛṣṇasarpeṇa* 'by a black snake.'

विशेषण शब्दों का रूप संज्ञाओं के समान ही होता है। प्रायः उन्हें प्रातिपदिक रूप में संज्ञा के पहले जोड़ दिया जाता है और तब वे सभी कारकों के रूप में अपरिवर्तित रहते हैं, क्योंकि इस तरह एक प्रकार का समास बन जाता है जिसे कर्मधारय कहा जाता है। उदाहरण के लिए 'कृष्ण' अर्थात् काला इस विशेषण को 'सर्प' अर्थात् साँप के साथ 'कृष्णः सर्पः' या 'कृष्णसर्पः' (काला साँप) लिखा जा सकता है और इसी प्रकार 'कृष्णेन सर्पेण' या 'कृष्णसर्पेण' (काले साँप से) भी लिखा जा सकता है।

70. The following list of adjectives may be committed to memory. An opposite meaning is given to an adjective by prefixing अ *a* or अन् *an*. Thus अतुल्य *atulya*

'unlike'; अनुचित *anucita* 'improper'. In the neuter gender they may be used as adverbs. Thus शीघ्रं गच्छति *śīghraṃ gacchati* 'he goes quickly.'

विशेषणों की नीचे दी गई सूची को याद कर लेना चाहिए। किसी विशेषण में 'अ' या 'अन्' जोड़ देने पर इसका विपरीत अर्थ हो जाता है। जैसे 'अतुल्य' अर्थात् समान नहीं; 'अनुचित' अर्थात् उचित नहीं। नपुंसकलिङ्ग में उनका प्रयोग क्रियाविशेषण के रूप में किया जा सकता है यथा 'शीघ्रं गच्छति' वह तेज जाता है।

कृष्ण	*kṛṣṇa*	black.	काला
शुक्ल	*śukla*	white.	श्वेत
नील	*nīla*	blue.	नीला
रक्त	*rakta*	red.	लाल
महत्	*mahat*†	great.	बड़ा
बहु	*bahu*	much.	अधिक
अल्प	*alpa*	little.	थोड़ा
शीघ्र	*śīghra*	swift.	जल्दी
मन्द	*manda*	slow.	धीमा
साधु	*sādhu*	good.	भला
संस्कृत	*saṁskṛta*	polished.	सभ्य
प्रिय	*priya*	beloved.	प्यारा
अनन्त	*ananta*	infinite.	असीमित
चित्र	*citra*	variegated.	अनेक रंग का
तुल्य	*tulya*	like.	समान
दीर्घ	*dīrgha*	long.	लम्बा
ह्रस्व	*hrasva*	short.	छोटा
नव	*nava*	new.	नया

† This becomes महा *mahā* in compound words.
समास में यह 'महा' हो जाता है।

व्याकुल	*vyākula*	perplexed.	घबड़ाया हुआ
शून्य	*śūnya*	empty.	खाली
सुन्दर	*sundara*	beautiful.	मनोहर
योग्य	*yogya*	suitable.	ठीक
वृद्ध	*vṛddha*	aged.	बूढ़ा
दक्षिण	*dakṣiṇa*	southern.	दक्षिण दिशा
क्षुद्र	*kṣudra*	mean.	तुच्छ
दूर	*dūra*	distant.	दूर
विस्मित	*vismita*	astonished.	चकित
स्थूल	*sthūla*	bulky.	मोटा
स्थिर	*sthira*	firm.	दृढ़
पुराण	*purāṇa*	old.	पुराना
उचित	*ucita*	proper.	ठीक

Like the participles mentioned at No. 52, the adjectives that end in *a* generally make the feminine in *ā* and the neuter in *am*. Thus प्रिया कन्या *priyā kanyā* 'a beloved girl'; दक्षिणमरण्यं *dakṣiṇamaraṇyam* 'the southern forest'.

सं० ५२ के बताये गये कृदन्त के समान ही अकारान्त विशेषणों में 'आ' जोड़कर स्त्रीलिङ्ग और 'अम्' जोड़कर नपुंसकलिङ्ग रूप बनता है। इस प्रकार 'प्रिया कन्या' (प्यारी लड़की), दक्षिणमरण्यं—दक्षिण का वन।

Lesson 19. पाठ १९

71. In the formation of *Karmadhāraya* (No. 69) and other compounds (as well as in cases where one word in a sentence immediately follows another—see No. 20) some change often takes place in the two

letters thus brought together. Some rules and remarks in regard to these changes here follow.

कर्मधारय (नियम ६९) तथा अन्य समासों को बनाते समय (तथा ऐसे स्थलों पर जहाँ वाक्य में एक शब्द दूसरे शब्द के तत्काल बाद आता हो—नियम २०) इस प्रकार एक साथ आने वाले दोनों वर्णों में कुछ परिवर्तन होता है। इन परिवर्तनों के विषय में कुछ नियम एवं मन्तव्य यहाँ दिये जाते हैं :—

72. *Similar* vowels are those that differ only in *length*. Thus *a* and *ā* are similar; *i and ī*; *u* and *ū*; &c. others—as *i* and *u*—are *dissimilar*.

समान स्वर वे हैं जिनमें केवल मात्रा (ह्रस्व, या दीर्घ) का अन्तर होता है। इस प्रकार 'अ' और 'आ' समान स्वर हैं; 'इ' और 'ई' तथा 'उ' और 'ऊ' समान स्वर हैं, इत्यादि। अन्यथा 'इ' और 'उ' असमान स्वर हैं।

73. Two *similar* vowels meeting, combine and form one *long* vowel. Ex. $a + a = \bar{a}$; $a + \bar{a} = \bar{a}$; $\bar{a} + a = \bar{a}$; $\bar{a} + \bar{a} = \bar{a}$; $i + \bar{i} = \bar{i}$; &c.

दो समान स्वरों की सन्धि होने पर वे मिलकर एक दीर्घ स्वर हो जाते हैं। उदाहरण अ + अ = आ; अ + आ = आ; आ + अ = आ; आ + आ = आ; इ + ई = ई इत्यादि।

74 If a word ends with *a* or *ā* and the next begins with a *dissimilar* vowel, then a *guṇa* substitute (see No. 17) takes the place of the two concurring vowels. Thus $a + i = e$; $a + u = o$.

यदि किसी शब्द के अन्त में 'अ' या 'आ' आवे और उसके बाद का शब्द किसी असमान स्वर से प्रारम्भ हो तो एक साथ आने वाले

दोनों स्वरों के स्थान पर गुण आदेश (देखो नियम १७) होता है। उदाहरण अ + इ = ए, अ + उ = ओ।

75. If a word ends with *a* or *ā* and the next begins with a diphthong; then a substitute called *vṛddhi* takes the place of the two concurring vowels. The *vṛddhi* substitute of *e* or *ai* is *ai;* and that of *o* or *au* is *au.*

यदि किसी शब्द के अन्त में 'अ' या 'आ' आवे और उसके बाद का शब्द किसी संयुक्त स्वर से प्रारम्भ होता हो तो एक साथ मिलने वाले दोनों स्वरों के स्थान पर वृद्धि नाम का आदेश होता है। 'ए' या 'ऐ' का वृद्धि आदेश 'ऐ' है और 'ओ' या 'औ' का 'औ'।

76. If a word ends with *i, u,* or *ṛ*—short or long—and the next begins with any other dissimilar vowel, then *i* is changed to its semivowel *y, u* to *v*, and *ṛ* to *r.*

यदि किसी शब्द के अन्त में इ, उ या ऋ—ह्रस्व या दीर्घ आवे और उसके बाद का शब्द किसी दूसरे असमान स्वर से प्रारम्भ होता हो तो 'इ' को इसके अन्तःस्थ वर्ण 'य्' में 'उ' को 'व्' में तथा ऋ को 'र्' में बदल दिया जाता है।

Exercise 19. अभ्यास १९

77. Turn the following pairs of words into *Karmmadhāraya* compounds—paying attention to the rules indicated as applicable to each—and putting each compound in the nominative singular.

निम्नलिखित शब्दों के जोड़ों से प्रत्येक के साथ लगने वाले नियमों पर ध्यान देते हुए—कर्मधारय समास बनाओ और प्रत्येक समास को प्रथमा एकवचन में रखो।

संस्कृत *saṁskṛta* + उक्ति *ukti* (No. 74), 'polished speech' परिष्कृतभाषा; अनन्त *ananta* + आत्मन् *ātman* (Nos. 73 and 74), 'the infinite soul'. अपरमित आत्मा; नील *nīla* + उत्पल *utpala*, 'a blue lotus' नीलाकमल; महा *mahā* + ऋषि *ṛṣi* (Nos. 74 and 17), 'a great sage' महात्मा ।

Lesson 20. पाठ २०

78. When the case of a noun depends upon another noun or participle, the dependent noun may be prefixed in its crude from to the other, making the compound called *Tatpuruṣa.* For example 'the shore *of* the sea' समुद्रस्य तीरं *samudrasya tīram,* may be expressed thus समुद्रतीरं *samudratīram* 'the sea-shore.'

जब किसी संज्ञा शब्द का कारक किसी दूसरी संज्ञा या कृदन्त पर आश्रित होता है तो आश्रित रहने वाली संज्ञा को प्रातिपदिक रूप में दूसरी संज्ञा या कृदन्त शब्द के पहले जोड़ा जा सकता है और इस प्रकार 'तत्पुरुष' नाम का समास बनता है। उदाहरण के लिए—समुद्र का किनारा 'समुद्रस्य तीरं' को 'समुद्रतीरं' भी लिखा जा सकता है।

79. In a *Tatpuruṣa* compound the first term, in the crude from, has sometimes the force of a Genitive, sometimes of a Locative, &c. For example—in the compound पङ्कमग्न *paṅkamagna* 'mud-sunk', the word 'mud' has evidently the force of the Locative—the meaning being 'sunk *in* the mud'. Again—लोभाकृष्ट *lobhākṛṣṭa* 'greed-attracted' evidently means 'attracted *by* greed'—the first term having the force of the Instrumental case.

तत्पुरुष समास में प्रातिपदिक रूप में स्थित प्रथम पद में कभी तो संबन्धकारक की और कभी अधिकरण कारक आदि की शक्ति होती है। उदाहरण के लिए–'पङ्कमग्न' 'कीचड़ में डूबा हुआ' में पङ्क या कीचड़ शब्द में अधिकरण की शक्ति है–जिसका अर्थ है :—'कीचड़ में डूबा हुआ'। पुनः 'लोभाकृष्ट' का स्पष्ट अर्थ है 'लोभ से खिंचा हुआ'– इसमें प्रथम पद में करणकारक की शक्ति है।

Exercise 20. अभ्यास २०

80. Turn the following pairs of words into *Tatpuruṣa* compounds—writing each compound in the Nominative singular.

'The influx (आगम *āgama*) of wealth (अर्थ *artha.*)'– No. 73 'A hundred (शत *śata* [n.]) of fools (मूर्ख *mūrkha*)'. 'Sport (क्रीडा *krīḍā*) in the water.' 'The shore of the Ganges (गङ्गा *gaṅgā*)'. '[Who has] come (आगत *āgata*) for refuge (शरण *śaraṇa*)'. 'Deserted (हीन *hīna*) by learning (विद्या *vidyā*)'. 'Covered (वेष्टित *veṣṭita*) with clothes (वस्त्र *vastra*)'. 'A couple (द्वय *dvaya* [n.]) of verses (श्लोक *śloka*)'. 'Lord (पति *pati*) of the earth (पृथिवी *pṛthivī*)'. 'The bank of a pond (सरस् *saras*)'.

निम्नलिखित शब्दों के जोड़ों से तत्पुरुष समास बनाओ और प्रत्येक समास को कर्त्ताकारक एकवचन में लिखो :—

धन (अर्थ) का आना (आगम)'–सं० ७३ मूर्खों (मूर्ख) का एक सैकड़ा (शत [नपुं०])। पानी (जल) में खेल (क्रीडा)। गङ्गा का किनारा। जो शरण के लिए आया हो (आगत)। विद्या से छोड़ा गया (हीन)'। कपड़ों (वस्त्र) से ढका हुआ (वेष्टित)। श्लोकों का एक जोड़ा (द्वय [नपुं०])। धरती (पृथिवी) के स्वामी (पति)। तालाब (सरस्) का किनारा।

Exercise 21. अभ्यास २१

ततः सरस्तीरं गत्वा ब्राह्मणो नीलोत्पलं ददर्श। पुत्र विद्याहीनं श्रुत्वा ब्राह्मणो दुःखेन व्याकुलो भविष्यति। लोभाकृष्टं पान्थं पङ्कमग्नं दृष्ट्वा हसति। ब्राह्मणस्य वचनं श्रुत्वा सभा विस्मिता बभूव।

Lesson 21. पाठ २१

81. The *Pronouns* are declined in most respects like nouns. The 1st and 2nd personal pronouns are very irregular. The following, being some of the most useful forms in which these present themselves, may be committed to memory.

अधिकांशतः सर्वनामों का रूप संज्ञाओं की तरह चलता है। उत्तम तथा मध्यम पुरुष के पुरुषवाचक सर्वनामों का रूप बड़ा अनियमित होता है। निम्नलिखित रूप इनके सर्वाधिक महत्वपूर्ण रूप हैं जिन्हें याद कर लेना चाहिए।

Nom.	कर्त्ता	अहं	*aham* I.	मैं
		वयं	*vayam* we.	हम
Acc.	कर्म	मां	*mām* me.	मुझको
		अस्मान्	*asmān* us.	हमको
Inst.	करण	मया	*mayā* by me.	मुझसे
		अस्माभिः	*asmābhiḥ* by us.	हमसे
Gen.	सम्बन्ध	मम	*mama* my.	मेरा
		अस्माकं	*asmākam* our.	हमारा
N.	कर्त्ता	त्वं	*tvam* thou.	तुम
		यूयं	*yūyam* you.	तुम लोग
Acc.	कर्म	त्वां	*tvām* thee.	तुमको
		युष्मान्	*yuṣmān* you.	तुम लोगों को

I.	करण	त्वया	*tvayā* by thee.	तुमसे
		युष्माभिः	*yuṣmābhiḥ* by you.	तुम लोगों से
G.	सम्बन्ध	तव	*tava* thy.	तुम्हारा
		युष्माकं	*yuṣmākam* your.	तुम लोगों का
N.	कर्त्ता	सः	*saḥ* he (or 'that').	वह
		ते	*te* they (or 'those')	वे
Acc.	कर्म	तं	*tam* him.	उसको
		तान्	*tān* them.	उनको
I.	करण	तेन	*tena* by him.	उससे
		तैः	*taiḥ* by them.	उनसे
D.	संप्रदान	तस्मै	*tasmai* to him.	उसको
		तेभ्यः	*tebhyaḥ* to them.	उनको
Ab.	अपादान	तस्मात्	*tasmāt* from him.	उससे
		तेभ्यः	*tebhyaḥ* from them.	उनसे
G.	संबन्ध	तस्य	*tasya* his.	उसका
		तेषां	*teṣām* of them.	उनका
R.	अधिकरण	तस्मिन्	*tasmin* in him.	उसपर
		तेषु	*teṣu* in them.	उनपर

82. The feminine of this pronoun is सा *sā* 'she' or 'that'. In the neuter we have तद् *tad* 'that' and तानि *tāni* 'those'.

इस सर्वनाम का स्त्रीलिंग 'सा' है। नपुंसकलिङ्ग में 'तद्' अर्थात् वह और 'तानि' अर्थात् वे होता है।

83. A useful demonstrative pronoun is formed by prefixing ए *e* to the foregoing. Thus एषः *eṣaḥ* 'he', 'that' एतद् *etad* 'that'. The pronoun इदं *idam* 'this', makes अयं *ayaṃ* in the Nominative singular masculine.

एक उपयोगी संकेतवाचक सर्वनाम अभी वर्णित सर्वनामों के पहले 'ए' लगाकर बनाया जाता है। इस प्रकार 'एषः' यह, 'एतद्' वह। इदं 'यह' सर्वनाम से कर्त्ता एकवचन पुल्लिङ्ग में 'अयं' रूप बनता है।

84. As observed at No. 64, the *interrogatives begin* with *k*, and the *relatives* with *y*. Thus कः *kaḥ* 'who'? कस्मात् *kasmat* from whom'? or 'from what'? यः *yaḥ* 'who'; यस्मात *yasmāt* 'from whom' or 'from which'.

जैसा कि नियम ६४ में देखा गया है प्रश्नवाचक 'क' से और संबन्धवाचक 'य्' से आरम्भ होते हैं। इस प्रकार 'कः' कौन ? 'कस्मात्' किस व्यक्ति से ? या किसके ? 'यः' जो, 'यस्मात' जिस व्यक्ति से या जिससे।

85. The Nom. sing. neut of कः *kaḥ* is किं *kim* 'what'?

'कः' का कर्त्ताकारक एकवचन नपुंसकलिङ्ग में किं, क्या ? होता है।

86. The indeclinable affixes *cit*; *api*, and *cana*, added to the several cases of the *interrogative* pronoun, give them an indefinite signification. Thus कश्चित् *kas-cit* (No. 25) 'somebody' or 'anybody'; केनचित् *kenacit* 'by some one'.

अनेक प्रश्नवाचक सर्वनामों के साथ 'चित्' 'अपि' और 'चन' अव्ययों को जोड़ने पर उनका अर्थ अनिश्चयवाचक हो जाता है। इस प्रकार कश्चित् (नियम २५) अर्थात् कोई व्यक्ति, 'केनचित्' किसी व्यक्ति से।

Exercise 22. अभ्यास २२

87. Write the following phrases in Sanskrit.

Where is my son ? Where is the book ? The jackal, seen by thee, will abandon the forest. The crow, seen

by me, abandons the tree. When (was) this heard by him ? By whom (was) the speech of the Brāhmaṇa heard ? Where does their father dwell ? This is our house. Where is your house ? Who sees you ? Some one sees you. Who dwell in those houses ? This speech (was) heard by a certain Brāhmaṇa. The king gave wealth to him.

निम्नलिखित वाक्यों को संस्कृत में लिखो :—

मेरा पुत्र कहाँ है ? पुस्तक कहाँ है ? तुझसे देखा गया सियार वन को छोड़ देगा । मुझसे देखा गया कौआ पेड़ को छोड़ता है । यह उससे कब सुना गया था ? ब्राह्मण की वाणी किससे सुनी गयी थी ? उनका पिता कहाँ रहता है ? यह हमारा घर है । तुम्हारा घर कहाँ है ? तुम्हें कौन देखता है ? कोई तुझे देखता है । उन घरों में कौन रहते हैं ? यह वाणी किसी ब्राह्मण से सुनी गयी थी । राजा ने उसे धन दिया ।

Lesson 22. पाठ २२

88. The mas. nom. sing. सः *saḥ* 'he,' 'that' and एषः *eṣaḥ* 'this' drop the *visarga* when a consonant follows. Thus स गच्छति *sa gacchati* 'he goes'; एष मनुष्यः *eṣa manuṣyaḥ* 'this man'.

जब पुंलिङ्ग, कर्त्ताकारक, एकवचन 'सः' (वह) तथा 'एषः' के बाद कोई व्यञ्जन आता है तो इनके विसर्ग का लोप हो जाता है। यथा—स गच्छति (वह जाता है) एष मनुष्यः (-यह आदमी) ।

89. The conjunction *'and'* is expressed by च *ca*, which is placed after its word. Thus पिता पुत्रश्च *pitā putraśca* 'the father and the son'. Same is the case with the conjunction वा *vā* 'or'. Thus पिता पुत्रो वा *pitā putro vā* 'the father or the son'.

समुच्चयबोधक शब्द 'और' को 'च' द्वारा व्यक्त किया जाता है। जिसे शब्द के बाद रखा जाता है। यथा—पिता पुत्रश्च (पिता और पुत्र); वा (या) के सम्बन्ध में भी यही बात है; यथा—पिता पुत्रो वा (पिता या पुत्र)।

VOCABULARY 6. शब्दावली ६

किन्तु	*kintu* but.	लेकिन	अपि	*api* also.	भी
यदि	*yadi* if.	यदि	चेत्	*cet* if.	यदि
तर्हि	*tarhi* then.	तब	नो चेत्	*no cet* if not.	नहीं तो
परन्तु	*parantu* but.	किन्तु	हि	*hi* because.	क्योंकि

90. when the subject or object of the verb is a whole clause, the clause is concluded by the conjunction इति *iti* 'thus'. For example :—रावणो रामेण जित इति मया श्रुतम् *rāvaṇo rāmeṇa jita iti mayā śrutam* 'Rāvaṇa was conquered by Rāma—thus (has been) heard by me'—or रावणो रामेण जित इति वदति वाल्मीकिः *rāvaṇo rāmeṇa jita iti vadati vālmīkiḥ* 'Vālmīki says Rāvaṇa was conquered by Rāma.'

जब क्रिया का कर्त्ता या कर्म एक सम्पूर्ण उपवाक्य होता है तो उस उपवाक्य का उपसंहार 'इति' (ऐसा) जोड़कर किया जाता है। उदाहरण के लिए—रावणो रामेण जित इति मया श्रुतं (रावण राम द्वारा जीता गया था—ऐसा मुझसे सुना गया है)—अथवा 'रावणो रामेण जित इति वदति वाल्मीकिः' (वाल्मीकि कहते हैं कि रावण राम द्वारा जीता गया था)

Exercise 23. अभ्यास २३

A tiger also dwells in the southern forest. Then he dwelt in a garden, but now he wanders on the sea-shore. Something fell again. In our village is a master of

poets. When is an empty house beautiful ? The girl and her aged father and mother are here. The poet says the tiger went to Kāśī. Is this man or that boy suitable? Unexpectedly a mouse fell from the seat. Again the Brāhmaṇas cross over the water. Everywhere he conquered the enemy. Thus the monkey will burn their houses. The horse went, but the jackal even now stands. Sometimes the devotee wandered here. The traveller heard the the sound of a lute somewhere. That man knew the scriptures. After that he went slowly to the old tree. Thus he took the book and the arrows, with (his) hand, from the thief. Among the Brāhmaṇas is a good preceptor. He will sometimes cook the food suitably. The preceptor says who laughed then ?

दक्षिण वन में एक बाघ भी रहता है। तब वह एक उपवन में रहता था, लेकिन अब वह समुद्र के किनारे घूमता है। कोई वस्तु फिर गिरी। हमारे गाँवों में कवियों का एक स्वामी है। एक खाली घर कब सुन्दर होता है ? लड़की और उसके बूढ़े पिता तथा माता यहाँ हैं। कवि कहता है कि बाघ काशी चला गया। यह आदमी योग्य है या वह लड़का ? सहसा एक चूहा आसन से गिरा। ब्राह्मण पुनः जल को पार करते हैं। उसने सभी जगह शत्रुओं को जीत लिया। इस प्रकार बन्दर उनके घरों को जला डालेंगे। घोड़ा चला गया, किन्तु सियार अब भी खड़ा है। कभी-कभी भक्त यहाँ घूमता था। राही ने कहीं वीणा की आवाज सुनी। वह पुरुष शास्त्र जानता था। उसके बाद वह मन्द गति से पुराने वृक्ष के निकट गया। इस प्रकार उसने अपने हाथ से चोर से पुस्तक और बाण ले लिये। ब्राह्मणों में वह अच्छा गुरु है। वह कभी अन्न अच्छे ढङ्ग से पकायेगा। गुरु कहते हैं उस समय कौन हँसा था ?

Lesson 23. पाठ २३

91. In making the *passive voice* of the present and some of the other tenses, the letter य *ya* is added to the root—and the terminations called the *ātmane-pada* are subjoined. Thus, the *ātmame-pada* termination of the 3d pers. sing. present being ते *te*, we have दह्यते *dahyate* 'it is burned', पच्यते *pacyate* 'it is cooked', &c.

वर्त्तमानकाल तथा कुछ और कालों से कर्मवाच्य बनाने के लिए धातु में 'य' वर्ण जोड़ा जाता है—और आत्मनेपद के प्रत्यय जोड़े जाते हैं। इस प्रकार वतमान काल प्रथमपुरुष (अन्यपु०) एकवचन का आत्मनेपद का प्रत्यय 'ते' है और इससे 'दह्यते' (यह जलाया जाता है) 'पच्यते' (यह पकाया जाता है) आदि रूप बनते हैं।

92. Some verbs are conjugated, in the active voice, with the terminations called the *ātmane-pada*. For example :—

कुछ धातुओं के कर्तृवाच्य में रूप आत्मनेपद प्रत्ययों से निष्पन्न होते हैं। उदाहरण के लिऐ :—

यत् *yat* 'to strive' प्रयत्न करना makes यतते *yatate*
'he strives.' वह प्रयत्न करता है

रम् ram 'to sport' खेलना makes रमते *ramate*
'he sports.' वह खेलता है

लोच् *loc* 'to see' देखना makes लोचते *locate*
'he sees' वह देखता है

वृत् *vṛt* 'to be' होना makes वर्त्तते *varttate*
'he is' वह है

शुभ् *śubh* 'to shine' चमकना makes शोभते *śobhate*
'he shines.' वह चमकता है

सह् *sah* 'to endure' सहन करना makes सहते *sahate*
'he endures.' वह सहता है
सेव् *sev* 'to serve' सेवा करना makes सेवते *sevate*
'he serves.' वह सेवा करता है
स्मि *smi* 'to smile' मुसकराना makes स्मयते *smayate*
'he smiles.' वह मुस्कराता है

Exercise 24. अभ्यास २४

Translate the following sentences :

The crow is seen by the jackal. The father is abandoned by the son. The oblation is burned by the fire. The food is cooked by the man. The deer sports in the forest. The Brāhmaṇa endures pain. The girl smiles. He sees crows on the tree. The king shines in the assembly. Why is the gardener perplexed ?

निम्नलिखित वाक्यों का अनुवाद करो :—

कौआ सियार से देखा जाता है। पिता पुत्र से छोड़ा जाता है। आहुति आग द्वारा जलाई जाती है। अन्न पुरुष द्वारा पकाया जाता है। मृग वन में आनन्द मनाता है। ब्राह्मण कष्ट सहन करता है। लड़की मुस्कराती है। वह पेड़ पर कौओं को देखता है। राजा सभा में चमकता है। माली क्यों घबड़ाया हुआ है ?

पिता पुत्रेण त्यक्तो दुःखं सहते। राजा कवेर्वचनं श्रुत्वा स्मयते। तव पुस्तकं कुत्र वर्त्तते। कन्या सरस्तीरे स्थित्वा नीलोत्पलं लोचते। पुत्रेण सरस्तीरे स्थित्वा नीलोत्पलं लोच्यते ॥

Lesson 24. पाठ २४

93. Verbs of the 2d conjugation do no insert with vowel before the tense-affixes (No. 17). Thus the verb अस् *as* 'to be' makes अस्ति *asti* 'he is'.

द्वितीय गण की धातुओं में विभक्तियों (नि० १७) के पहले स्वर नहीं जोड़े जाते। इस प्रकार 'अस्' (होना) धातु से 'अस्ति' (वह है) रूप बनता है।

Of the verb 'to be' the following portions may be committed to memory.

'होना' क्रिया के निम्नलिखित रूप याद कर लेने चाहिए :—

Present. वर्तमान

Singular.	*Plural*.
अस्ति *asti* he is. वह है	सन्ति *santi* they are. वे हैं

1st Preterite. भूतकाल, लङ्लकार

आसीत् *āsīt* he was. वह था	आसन् *āsan* they were. वे थे

Imperative. आज्ञा

अस्तु *astu* let it be. वह होवे	सन्तु *santu* let them be. वे होवें

Potential. विधिलिङ्

स्यात् *syāt* he may (or should)be. उसे होना चाहिए	स्युः *syuḥ* they may be उन्हें होना चाहिए

Exercise 25. अभ्यास २५

There is in that wood a certain tree. Thy father is not in the house. There was water everywhere. Thus let it be, said the Brāhmaṇa. The son should not be perplexed. In the empty village was an aged jackal. Let the horses be beautiful. The garden is distant. The preceptors should be good men. He says it is proper. That maṇ said it was improper. Having seen the deer sunk in the mud, the jackal laughed.

वहाँ उस वन में कोई पेड़ है। तुम्हरे पिता घर में नहीं हैं। वहाँ सभी जगह जल था। ब्राह्मण ने कहा ऐसा ही हो। पुत्र को घबड़ाना नहीं चाहिए। खाली गाँव में एक बूढ़ा सियार था। घोड़े सुन्दर होवें। उपवन दूर है। गुरुओं को सज्जन होना चाहिए। वह कहता है कि यह उचित है। उस पुरुष ने कहा यह अनुचित था। मृग को कीचड़ में फँसा देखकर सियार हँसा।

कुत्र सन्ति मम पुस्तकानि। आसीत् तस्मिन् वने कश्चन शृगालः। यदि तथा स्यात् तर्हि पिता व्याकुलो भविष्यति। तस्य वचनं श्रुत्वा कथं व्याकुलाः स्युः।

94. In addition to the rules for the treatment of *visarga* given in Nos. 21, 24 and 48, it is to be observed that अः *aḥ*, when आ *ā* follows, drops the *visarga*. Thus शृगाल आसीत् *śṛgāla āsīt* 'there was a jackal.'

विसर्ग के सम्बन्ध में २१, २४ तथा ४८ में दिये गये नियमों के अतिरिक्त यह ध्यान देने योग्य है कि जब 'अः' के बाद 'आ' आवे तो विसर्ग का लोप हो जाता है; यथा 'शृगाल आसीत्' (एक सियार था)।

95. The vowel अ *a* drops when it comes after a word ending in ओ *o* or ए *e*. Thus नरोऽद्य *naro' dya* 'the man to-day;' तेऽत्र न सन्ति *te'tra na santi* 'they are not here.' The character ऽ serves, like an apostrophe, to mark the place of the expunged vowell.

जब 'अ' स्वर किसी ऐसे शब्द के बाद आता है जिसके अन्त में 'ओ' या 'ए' हो तो उसका लोप हो जाता है; यथा नरोऽद्य (पुरुष आज) 'तेऽत्र न सन्ति' (वे यहाँ नहीं हैं)। लोपसूचक चिन्ह के समान ऽ चिह्न लुप्त हुए स्वर के स्थान का निर्देश करता है।

Lesson 25, पाठ २५

The following are useful verbs of the 2d conjugation.

अदादिगण की कुछ उपयोगी धातुएँ निम्नलिखित हैं :—

ब्रू *brū* to speak (or say). बोलना

ब्रूते *brūte* he speaks. वह बोलता है

वच् *vac* to speak. कहना

वक्ति *vakti* he speaks. वह कहता है

या *yā* to go. जाना

याति *yāti* he goes. वह जाता है

स्ना *snā* to bathe. नहाना

स्नाति *snāti* he bathes. वह नहाता है

हन् *han* to kill. मारना

हन्ति *hanti* he kills. वह मारता है

96. The characteristic peculiarity of the 3d conjugation is reduplication of the radical syllable. For example :—दा *dā* 'to give' makes ददाति *dadāti* 'he gives'.

तृतीय (जुहोत्यादि) गण का यह विशिष्ट लक्षण है कि आरम्भिक अक्षर का द्वित्व होता है। उदाहरण के लिए :—दा (देना) से 'ददाति' (वह देता है)।

97. The characteristic of the 4th conjugation is य *ya*. Examples :—

चतुर्थ दिवादि गण का विशेष चिह्न 'य' है। उदाहरण :—

क्षिप् *kṣip* to throw. फेंकना

क्षिप्यति *kṣipyati* he throws. वह फेंकता है

जन् *jan* to be produced. उत्पन्न होना

जायते *jāyate* it is produced. वह उत्पन्न होता है

नश् *naś* to perish. नष्ट करना

नश्यति *naśyati* he perishes. वह नष्ट होता है

पद् *pad* to go. जाना

पद्यते *padyate* he goes. वह जाता है

युध् *yudh* to fight. लड़ना

युध्यते *yudhyate* he fights. वह लड़ता है

विद् *vid* to exist. होना

विद्यते *vidyate* it exists. वह है

98. The characteristic of the 5th conjugation is the syllable नु *nu*—changeable, under certain circumstances, to नो *no*. Examples :—

पञ्चम (स्वादि) गण का विशिष्ट चिह्न है 'नु' जो कुछ स्थितियों में 'नो' में बदल जाता है। उदाहरण:—

आप् *āp* to obtain. पाना

आप्नोति *āpnoti* he obtains. वह पाता है

शक् *śak* to be able. सकना

शक्नोति *śaknoti* he is a able. वह समर्थ है

99. The 6th conjugation, like the lst, takes a short अ *a* but does not, like the lst, substitute *guṇa* (No. 17) Examples :—

भ्वादि गण के समान षष्ठ (तुदादि) गण में भी ह्रस्व 'अ' जोड़ा जाता है किन्तु प्रथम गण के समान इसमें गुण (नियम १७) नहीं होता। उदाहरण :—

तृप् *tṛp* to satisfy. सन्तुष्ट करना

तृपति *tṛpati* he satisfies. वह सन्तुष्ट करता है

इष् *iṣ* to wish चाहना

इच्छति *icchati* he wishes. वह चाहता है

प्रच्छ् *pracch* to ask. पूछना

पृच्छति *pṛcchati* he asks. वह पूछता है

मृ *mṛ* to die. मरना

म्रियते *mriyate* he dies. वह मरता है

स्पृश् *spṛś* to touch. छूना

स्पृशति *spṛśati* touches. वह छूता है

100. The 7th conjugation, in certain tenses; inserts न *na* before the final of the root. Examples :—

सप्तम (रुधादि) गण में, कुछ कालों में; धातु के अन्तिम वर्ण के पूर्व न जोड़ा जाता है। उदाहरण :—

भिद् *bhid* to break. तोड़ना

भिनत्ति *bhinatti* he breakes. वह तोड़ता है

हिस् *his* to injure. चोट पहुँचाना

हिनस्ति *hinasti* he injures. वह चोट करता है

101. The 8th conjugation adds उ *u* (which in certain cases becomes ओ *o*) Example :—

अष्टम (तनादि) गण में 'उ' जोड़ा जाता है (जो कुछ स्थितियों में 'ओ' हो जाता है) । उदाहरण:—

कृ *kṛ* to do or make. करना, बनाना

करोति *karoti* he makes. वह बनाता है

Other parts of this verb are चकार *cakāra* 'he made'; करिष्यति *kariṣyati* 'he will make'; कुर्य्यात् *kuryyāt* 'he should make.'

इस क्रिया के अन्य रूप हैं :—'चकार' (उसने बनाया) 'करिष्यति' (वह बनावेगा); 'कुर्य्यात्' (उसे बनाना चाहिये) ।

102. The 9th conjugation subjoins ना *nā*. Examples:—

नवम (क्र्यादि) गण में 'ना' जोड़ा जाता है। उदाहरण :—

गृह् *gṛh* to take. लेना

गृह्णाति *gṛhṇāti* he takes. लेता है

ज्ञा *jñā* to know. जानना

जानाति *jānāti* he knows. जानता है

103. The 10th conjugation subjoins इ *i*, which is liable, among other things, to be changed to its semi-vowel. Examples :—

दशम (चुरादि) गण में 'इ' जोड़ा जाता है। जो अन्य बातों के साथ अन्तःस्थ वर्ण में परिवर्त्तित हो जाता है। उदाहरण :—

कथ् *kath* to tell. कहना

कथयति *kathayati* he tells. कहता है

चित् *cit* to think. सोचना

चिन्तयति *cintayati* he thinks. सोचता है

मत्र् *matr* to advise. राय देना

मन्त्रयति *mantrayati* he advises. राय देता है

Exercise 26. अभ्यास २६

Translate the following sentences.

The son says. Rāma kills Rāvaṇa. The king gives welth to the Brāhmaṇa. The girl throws the flower. How is a blue lotus produced here? Rāvaṇa fights, but, conquered by Rāma, he perishes. An enemy of that man does not exist anywhere. He obtains wealth. Not any one is able. He satisfies the sons with food. What does that man wish? Why does not any one ask him? The man, having gone to the sea-shore, dies. The girl does not touch the flower. The son breaks the fruit from the tree. The good man does not injure any one. What is he doing? He takes the book. No one knows. Why does he not tell? Thus he thinks. He does not thus advise.

निम्नलिखित वाक्यों का अनुवाद करो :—

पुत्र कहता है। राम रावण को मारता है। राजा ब्राह्मण को धन देता है। लड़की फूल फेंकती है। नीला कमल यहाँ कैसे उत्पन्न हुआ है? रावण लड़ता है, किन्तु राम से जीता जाकर वह नष्ट हो जाता है। उस व्यक्ति का शत्रु कहीं भी नहीं है। वह धन पाता है। कोई भी समर्थ नहीं है। वह पुत्रों को अन्न से सन्तुष्ट करता है। वह आदमी क्या चाहता है? कोई उससे क्यों नहीं पूछता है? वह आदमी समुद्र-तट पर जाकर मरता है। लड़की फूल को नहीं छूती है। पुत्र पेड़ से फल तोड़ता है। सज्जन किसी को चोट नहीं पहुँचाता। वह क्या कर रहा है? वह पुस्तक लेता है। कोई नहीं जानता है। वह क्यों नहीं कहता है। वह ऐसा सोचता है। वह ऐसी राय नहीं देता है।

Lesson 26. अभ्यास २६

In the following exercise the verbs given in the preceding lesson are exhibited in the various forms treated of in Nos. 28, 30, 39, 52, 55, 57, and 61–a reference to which rules may enable the learner to translate the phrases.

निम्नलिखित अभ्यास में पिछले पाठ में दी गयी क्रियाओं को विविध रूपों में दिखाया गया है—जिनका विवेचन २८, ३०, ३९, ५२, ५५, ५७ तथा ६१ में किया जा चुका है। इन नियमों के अवलोकन से सीखने वाले को इनके अनुवाद में सहायता मिल सकती है।

Exercise 27. अभ्यास २७

कुत्र जायन्ते नीलोत्पलानि। फलं क्षिप्त्वा गच्छति। कथं न कथयिष्यति। एवं चिन्तयित्वा वदति। एवं ज्ञात्वा समुद्रतीरं गच्छति। कदाचित् तथा न कुप्योत्। पिता पुत्रं गृहीत्वा गृहं गच्छति। शुक्लाः काका न विद्यन्ते कुत्रचित्। कोऽस्त्ययं नरः। उत्पलानि तत्र जातानि नीलानि न सन्ति परन्तु शुक्लानि। फलं गृहीत्वा ग्रामं गच्छति। कुत्र याति। कदा स्नास्यति।

If the disciple shall ask, then he will obtain; if not, he will not obtain. Having seen the ocean, he goes to the mountain. The monkey sports in the garden, and in the wood, and on the bank of the pond. They say the traveller will die. Why do the boys break the garlands? Sometimes he speaks improperly. The beautiful girl bathes in the ocean. Having drunk water he goes to the secrifice. Thus he wandered and there he dwelt. The father, having seen (his) son, smiles. Everywhere and always disciples thus serve (their) preceptors. They endure great pain. The Brāhmaṇa, deserted by learning, does not shine in the assembly. Sin is produced by anger. Good men quickly obtain great prosperity.

यदि शिष्य मांगेगा, तो वह पावेगा; यदि नहीं (मांगेगा) तो वह नहीं पावेगा। समुद्र को देखकर वह पर्वत को जाता है। बन्दर उपवन में, वन में और तालाब के किनारे आनन्द मनाते हैं। वे कहते हैं कि राही मर जायगा। लड़के मालाओं को क्यों तोड़ते हैं? वह कभी-कभी अनुचित बोलता है। सुन्दर लड़की समुद्र में स्नान करती है। पानी पीकर वह यज्ञ को जाता है। इस प्रकार वह घूमता रहा और वहाँ उसने निवास किया। पिता (अपने) पुत्र को देखकर मुस्कराता है। सभी जगह और सदैव शिष्य (अपने) गुरुओं की इस प्रकार सेवा करते हैं। वे अधिक कष्ट सहते हैं। विद्या से रहित ब्राह्मण सभा में शोभित नहीं होता है। पाप क्रोध से पैदा होता है। अच्छे व्यक्ति शीघ्र बड़ी समृद्धि पाते हैं।

Lesson 27. पाठ २७

104. Two or more words coupled together by the conjunction '*and*' may be made into a compound called

Dvandva. If there be only two words in it, the compound takes the terminations of the *Dual* number. The *nom. dual* termination of a noun ending in अ *a* is औ *au.* Thus 'Rāma and Lakshmaṇa' may be expressed by रामलक्ष्मणौ *rāma–lakṣmaṇau.*

दो या दो से अधिक शब्द जब एक साथ "और" शब्द से जुड़े होते हैं तो उन्हें द्वन्द्व नाम के समास में रखा जा सकता है। यदि केवल दो ही शब्द हों तो इस समास के अन्त में द्विवचन की विभक्ति लगती है। अकारान्त संज्ञा का कर्त्ताकारक द्विवचन की विभक्ति है 'औ'। इस प्रकार राम और लक्ष्मण को "रामलक्ष्मणौ" लिखा जा सकता है।

105. When a *Dvandva* compound contains more than two terms, it generally takes the terminations of the plural. Example :—ब्राह्मणक्षत्रियविट्शूद्राः *brāhmaṇa-kṣatriya-viṭ-śūdrāḥ* 'the Brāhmaṇa, and Kṣatriya, and Vaiśya, and Śūdra.'

जब किसी द्वन्द्व समास में दो से अधिक पद होते हैं तो प्रायः इसमें बहुवचन होता है। उदाहरण :—ब्राह्मणक्षत्रियविट्शूद्राः (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र)।

106. Verbs, as well as nouns and pronouns, have a dual number. The 3d pers. dual of the present tense ends in तः *taḥ.* Thus रामलक्ष्मणौ वने वसतः *rāma-lakṣmaṇau vane vasataḥ.*; 'Rāma and Lakṣmaṇa dwell in the forest' :—काकौ वृक्षे वसतः *kākau vṛkṣe vasataḥ* 'two crows dwell in the tree.'

क्रियाओं, तथा संज्ञाओं एवं सर्वनामों का द्विवचन होता है। वर्तमानकाल के प्रथमपुरुष द्विवचन के अन्त में 'तः' आता है। इस प्रकार "रामलक्ष्मणौ वने वसतः" (राम और लक्ष्मण वन में रहते हैं)—काकौ वृक्षे वसतः (दो कौए पेड़ पर रहते हैं)।

107. When two or more words are put together to form an epithet, the compound is called a *Bahuvrīhi*. For example :—नामधेय, *nāmadheya* meaning a 'name', we may have the epithet पाटलिपुत्रनामधेय *pāṭaliputra-nāmadheya* 'the name of which is Pāṭaliputra'. Such an epithet, like an adjective, agrees with its noun. Thus पाटलिपुत्रनामधेयं नगरं *pāṭaliputra-nāmadheyaṃ nagaram* 'a city named Pāṭaliputra' :—कुशहस्तो नरः *kuśa-hasto naraḥ* 'a man with kuśa-grass in his hand'.

जब दो या दो से अधिक शब्दों को एक साथ रखकर विशेषण बनाया जाता है तो समास को 'बहुव्रीहि' कहते हैं। उदाहरण के लिए—नामधेय—जिसका अर्थ है नाम, इससे विशेषण हो सकता है पाटलिपुत्रनामधेय (जिसका नाम पाटलिपुत्र है) इस प्रकार का विशेषण, विशेषण शब्द के समान संज्ञा के अनुकूल होता है। यथा पाटलिपुत्रनामधेयं नगरं—(पाटलिपुत्र नाम का नगर), 'कुशहस्तो नरः' (हाथ में कुश की घास लिया हुआ व्यक्ति)।

108. The changes (referred to in No. 71) when heterogeneous letters come together, in compounds or in sentences, are not confined to the vowels. The principal rule in reagard to the changes of the consonants is the following.

(ऊपर नि० ७१ में उल्लिखित) परिवर्तन जब एक समान वर्ण साथ साथ आते हैं तो वे समास में हों या वाक्य में, केवल स्वरों तक ही सीमित नहीं होते। व्यञ्जनों के परिवर्तन के सम्बन्ध में प्रमुख नियम ये हैं :—

109. A hard consonant (No. 24) before a soft consonant is changed to the soft of its own class; and

vice versa. Thus महत् *mahat* + भयम् *bhayam* = महद्भयम् *mahadbhayam* 'great fear'.

एक मृदु व्यंजन के पहले आने वाले कठोर व्यञ्जन (नं० २४) को उस वर्ग के मृदु व्यञ्जन में बदल दिया जाता है: तथा ऐसा ही इसके विपरीत होने पर भी। महत् + भयम् = महद्भयम्।

110. A dental consonant coming before a palatal or cerebral is changed to a corresponding letter. The pronunciation is not so much altered by this, but that one who knows the separate words can readily recognise them when so combined. The same remark applies to the change of न *na* to ण *ṇa* in certain cases—as when preceded by र् *r*.

दन्त्य व्यंजन तालव्य या मूर्धन्य के पहले आने पर समान वर्ण में बदल दिया जाता है। इससे उच्चारण में अधिक अन्तर नहीं होता किन्तु जो व्यक्ति भिन्न शब्दों को जानता है वह इनकी सन्धि होने पर इन्हें तत्काल पहचान सकता है। यही बात कुछ स्थितियों में—न के 'ण' में परिवर्तन यथा 'र्' के पहले आने पर होने के विषय में भी है।

111. The letters त् *t* and श् *ś* meeting become च्छ् *cch.* The commonest instance of this occurs in तत् *tat* + श्रुत्वा *śrutvā* = तच्छ्रुत्वा *tacchrutvā* 'having heard that'.

'त्' और 'श्' की सन्धि होने पर 'च्छ्' हो जाता है। इसका सर्वाधिक प्रचलित उदाहरण है तत् + श्रुत्वा = तच्छ्रुत्वा (वह सुनकर)।

Exercise 28. अभ्यास २८

The two sons go to the sea-shore. The crow and the jackal dwell in the forest. Having heard that, the deer abandons the forest. There is, on the bank of the

Ganges, a city named Kāsī. Why do the preceptor and the disciple again go to the garden? When will the snake, the mouse and the horse dwell in one place? Men of slow understanding are infinite. A man of great wealth wishes thus. A boy and a girl of good family are here. A village of empty houses is not distant. A man of great merit says so. A boy beloved by (his) mother and a girl beloved by (her) father are here.

दो पुत्र समुद्रतट को जाते हैं। कौआ और सियार वन में रहते हैं। इसे सुनकर मृग वन को छोड़ता है। गङ्गा के तट पर काशी नाम का एक नगर है। गुरु और शिष्य फिर वन को क्यों जाते हैं? साँप, चूहा और घोड़ा कब एक स्थान पर निवास करेंगे? अल्पबुद्धि वाले मनुष्य असंख्य हैं। अधिक धन वाला व्यक्ति इस प्रकार इच्छा करता है। एक अच्छे वंश का एक लड़का और एक लड़की यहाँ हैं। खाली घरों वाला एक गाँव दूर नहीं है। एक महान् पुण्यशाली व्यक्ति इस प्रकार कहता है। माता का प्रिय एक लड़का तथा पिता की प्रिय एक लड़की यहाँ है।

Lesson 28. पाठ २८

112. In the native Sanskrit grammar, all the varieties of declension are educed from a set of technical terminations which the learner will find it worth his while to commit to memory. They are to be read across the page—thus "*su, au, jas*" &c.

देशीय संस्कृत व्याकरण में सभी प्रकार के शब्दरूप प्रत्ययों के एक विशिष्ट वर्ग से बनाये जाते हैं, जिसे सीखने वाले कण्ठस्थ करने योग्य पावेंगे। उन्हें इस प्रकार पढ़ना चाहिए—सु–औ–जस् इत्यादि।

		Sing. एकवचन		*Dual.* द्विवचन		*Plur.* बहुवचन	
Nom.	कर्ता	सु	*sū.*	औ	*au.*	जस्	*jas.*
Acc.	कर्म	अं	*am.*	औट्	*auṭ.*	शस्	*śas.*
Inst.	करण	टा	*ṭā.*	भ्यां	*bhyām.*	भिस्	*bhis.*
Dat.	सम्प्रदान	ङे	*ṅe.*	भ्यां	*bhyām.*	भ्यस्	*bhyas.*
Abl.	अपादान	ङसि	*ṅasi.*	भ्यां	*bhyām.*	भ्यस्	*bhyas.*
Gen.	संबन्ध	ङस्	*ṅas.*	ओस्	*os.*	आं	*ām.*
Loc.	अधिकरण	ङि	*ṅi.*	ओस्	*os.*	सुप्	*sup.*

113. The vocative has no separate termination, being considered as a modification only of the nominative.

सम्बोधन की विभक्ति भिन्न नहीं होती और उसे कर्ता कारक का ही एक रूप माना जाता है।

114. Now, of these inflectional terminations it is to be remarked that some of the letters serve only to form syllables and facilitate enunciation: they are rejected, therefore, when those letters which are essential are applied to the word to be declined. These auxiliary letters are the *u* of *su*; the *j* of *jas;* the *ś* of *śas;* the *ṭ* of *auṭ* and *ṭā;* the *ṅ* everywhere; the *i* of *ṅasi;* and the *p* of *sup*. It is also to be observed that a final स् *s* is changed to *visarga*. The actual terminations, therefore, will be :—

अब, इन शब्दविभक्तियों में कुछ वर्ण केवल एक अक्षर बनाने एवं उच्चारण की सुविधा के लिये रखे गये हैं; अतएव जब शब्द रूप बनाने में आवश्यक वर्णों को जोड़ा जाता है तो उपर्युक्त प्रकार के

वर्णों को हटा दिया जाता है। ये गौण वर्ण हैं 'सु' में 'उ', 'जस्' में 'ज्' 'शस्' में 'श्', 'औट्' और टा में 'ट्'; सर्वत्र ङ्, ङसि का इ, और सुप् का 'प्'। यह भी ध्यान देने योग्य है कि अन्तिम 'स्' को विसर्ग कर दिया जाता है। अतएव वास्तविक प्रत्यय ये होंगे :—

		Sing.		*Dual.*		*Plur.*	
		एकवचन		द्विवचन		बहुवचन	
Nom.	कर्ता	:	*ḥ*	औ	*au*	अः	*aḥ*
Acc.	कर्म	अं	*am*	औ	*au*	अः	*aḥ*
Inst.	करण	आ	*ā*	भ्यां	*bhyām*	भिः	*bhiḥ*
Dat.	संप्रदान	ए	*e*	भ्यां	*bhyām*	भ्यः	*bhyaḥ*
Abl.	अपादान	अः	*aḥ*	भ्यां	*bhyām*	भ्यः	*bhyaḥ*
Gen.	संबन्ध	अः	*aḥ*	ओः	*oḥ*	आं	*ām*
Loc.	अधिकरण	इ	*i*	ओः	*oḥ*	सु	*su*

115. In applying these terminations to the final letter of the word to be declined, recollection must be preserved of the rules for the permutation of vowels and consonants. For example, in declining the word नौ *nau* 'a ship', it must be remembered that औ *au*, followed by a vowel, becomes आव् *āv;* and that स् *s* becomes ष् *ṣ* when it follows any other vowel than *a* or *ā* and is not final. Thus :—

जिस शब्द का रूप चलाना हो उसके अन्तिम वर्ण के साथ इन प्रत्ययों को जोड़ते समय स्वरों तथा व्यंजनों की सन्धि के नियमों को याद रखना होगा। उदाहरण के लिए 'नौ' (नाव) शब्द का रूप बनाते समय यह याद रखना चाहिए कि 'औ' के बाद जब कोई स्वर आता है तो "औ" को 'आव्' हो जाता है और 'स्' जब 'अ' या 'आ' के अतिरिक्त कोई अन्य स्वर के बाद आता है और वह शब्द के अन्त

में नहीं होता तो उसे (अर्थात् 'स्' को) 'ष्' हो जाता है। इस प्रकार :—

	Sing.	Dual	Plur.
Nom.	नौः *nauḥ,*	नावौ *nāvau,*	नावः *nāvaḥ,*
कर्ता	a ship. एक नाव	two ships. दो नावें	ships. नावें
Acc.	नावं *nāvam,*	नावौ *nāvau,*	नावः *nāvaḥ,*
कर्म	a ship. नाव को		
Inst.	नावा *nāvā,*	नौभ्यां *naubhyām*	नौभिः *naubhiḥ,*
करण	by—. नाव से		
Dat.	नावे *nāve,*	नौभ्यां *naubhyām*	नौभ्यः *naubhyaḥ,*
सम्प्र०	to—. नाव को		
Abl.	नावः *nāvaḥ,*	नौभ्यां *naubhyām*	नौभ्यः *naubhyaḥ,*
अपा०	from—. नाव से		
Gen.	नावः *nāvaḥ,*	नावोः *nāvoḥ,*	नवा *nāvām,*
संबो०	of—. नाव का		
Loc.	नावि *nāvi,*	नावोः *nāvoḥ,*	नौषु *nauṣu,*
अधि०	in—. नाव में		

Exercise 29. अभ्यास २९

Write down, with the signification, the following cases of the following words, viz :—

अर्थ के साथ निम्नलिखित शब्दों के उल्लिखित रूप लिखो :—

Inst. sing., inst. plu. and loc. plu. of उक्ति *ukti* 'speech'. Gen. sing. and inst. sing. of आत्मन् *ātman* 'soul' or 'self'. Loc. sing. and gen. plu. of दिश् *diś* 'a side' or 'direction'. Loc. sing. of मनस् *manas* 'the mind'. Inst. sing. and inst. plu. of अग्नि *agni* 'fire'. Nom. dual and loc. plu. of नदी *nadī* 'a river'. Loc. plu. of स्त्री *strī* 'a woman'. Dat. sing., inst. plu. and loc. plu. of पितृ *pitṛ* 'a father'. Inst. sing., dat. sing., abl. sing., inst. plu. and gen. plu. of वाच् *vāc*

'speech'. Inst. sing. of मरुत् *marut* 'the wind'. Loc. sing. of शरद् *śarad* 'autumn'. Gen. plu. of धीमत् *dhīmat* 'sensible'. Loc. sing. of सरस् *saras* 'a pond'. Gen. plu. of मधुलिह् *madhulih* 'a bee'.

उक्ति (वाणी) का करण, एकवचन; करण बहुव० तथा अधि० बहुव० । आत्मन् (आत्मा) का सम्बन्ध, एकवचन तथा करण एकव० । दिश् (दिशा) का अधिकरण एकव० तथा सम्बन्ध बहुवचन । 'मनस्' (मन) का अधि० एकव० । अग्नि (आग) का करण एकव० तथा करण बहुव० । नदी का कर्ता द्विव० तथा अधिकरण बहुव० । 'स्त्री' का अधिकरण बहुवचन । पितृ (पिता) का सम्प्रदान एकवचन, करण बहुवचन तथा अधिकरण बहुवचन । वाच् (वाणी) का करण एकवचन, सम्प्रदान एकवचन, अपादान एकवचन, करण बहुवचन और सम्बन्ध बहुवचन । मरुत् (वायु) का करण एकवचन । 'शरद्' का अधिकरण एकवचन, धीमत् (बुद्धिमान) का सम्बन्ध बहुवचन । सरस् (तालाब) का अधिकरण एकवचन । मधुलिह् (भौंरा) का सम्बन्ध बहुवचन ।

Lesson 29. पाठ २९

116. As the native Sanskrit grammar present one scheme of termination, which, by means of the requisite substitutions, may be accommodated to all nouns, so it presents one scheme of terminations which, with the requisite substitutions, becomes applicable to all the tenses of every verb. These terminations are enunciated in a different order, as regards *person,* from that to which the European reader is accustomed,—the person applicable to what is spoken of being the first, and that applicable to the speaker being the third. Instead of

naming the persons by *numbers*, therefore, it may be advisable here to give them the epithets appropriated to them in the native grammar—calling that which *is spoken of* the 'Lowest', the one *spoken to* the 'Middle' and the *speaker* the 'Highest' person.

जिस प्रकार देशीय संस्कृत व्याकरण विभक्तियों की एक प्रकार की योजना प्रस्तुत करता है जो कुछ आदेशों के साथ सभी संज्ञाशब्दों के साथ लगते हैं, उसी प्रकार इसमें एक इस प्रकार के विभक्तियों की भी योजना की गई है जो कुछ आवश्यक आदेशों के साथ प्रत्येक क्रिया के सभी कालों में लगते हैं। जहाँ तक पुरुष का सम्बन्ध है इन प्रत्ययों को उस क्रम से भिन्न रूप में गिनाया गया है, जिस क्रम में योरोपीय पाठक समझने के अभ्यस्त हैं—इसमें जिसके विषय में कहा जाता है उसे पहले और जो वक्ता के विषय में होता है उसे तीसरे स्थान पर रखा गया है। पुरुषों का नाम संख्या के आधार पर रखने के स्थान पर यहाँ उन्हें देशीय व्याकरण में दिये गये विशेषण देना ठीक होगा—जिसके विषय में कहा जाय उसे प्रथम पुरुष (या निकृष्ट), जिससे कहा जाय उसे मध्यम और वक्ता को उत्तम पुरुष में रखा जाय।

117. The terminations are as follows :—

क्रिया की विभक्तियाँ इस प्रकार हैं :—

		Sing.	*Dual.*	*Plur.*
		एकव०	द्विव०	बहुव०
प्रथमपुरुष	*Lowest.*	तिप् *tip.*	तस् *tas.*	झि *jhi.*
मध्यमपुरुष	*Middle.*	सिप् *sip.*	थस् *thas.*	थ *tha.*
उत्तमपुरुष	*Highest.*	मिप् *mip.*	वस् *vas.*	मस् *mas.*

118. In these, as in the inflectional terminations of nouns, some of the letters serve to indicate certain

operations; and these are rejected when the termination is affixed to the verb. After the requisite rejections and substitutions, the terminations appear as follows :—

संज्ञाओं के विभक्ति प्रत्ययों के समान इनमें भी कुछ अक्षर केवल कतिपय कार्यों को सूचित करते हैं और जब इन प्रत्ययों को धातुओं के साथ जोड़ते हैं तो ऐसे अक्षरों को हटा दिया जाता है। आवश्यक लोप और आदेश करने के उपरान्त इनका रूप इस प्रकार हो जाता है :—

ति	*ti.*	तः	*taḥ.*	अन्ति	*anti.*
सि	*si.*	थः	*thaḥ*	थ	*tha.*
मि	*mi.*	वः	*vaḥ.*	मः	*maḥ.*

119. Adding these terminations to the root अद् *ad* 'to eat', and changing its final soft consonant to a hard one (No. 109) when the affix begins with a hard consonant, we have

इनको 'अद्' (खाना) धातु के साथ जोड़ने पर और जब प्रत्यय कठोर व्यंजन से प्रारम्भ होता है वहाँ धातु का अन्तिम मृदु व्यंजन को कठोर व्यंजन में परिवर्तित करने पर (नियम १०६) ये रूप होंगे :—

अत्ति *atti,* he eats. वह खाता है	अत्तः *attaḥ,* they two eat. वे दोनों खाते हैं	अदन्ति *adanti,* they eat. वे खाते हैं
अत्सि *atsi,* thou eatest. तू खाता है	अत्थः *atthaḥ,* you two eat. तुम दोनों खाते हो	अत्थ *attha,* you eat. तुम लोग खाते हो
अद्मि *admi,* I eat. मैं खाता हूँ	अद्वः *advaḥ,* we two eat. हम दोनों खाते हैं	अद्मः *admaḥ,* we eat. हम लोग खाते हैं

120. When a vowel precedes the *m* or *v* of a tense-affix it is lengthened. Thus we have भवामि *bhavāmi* 'I become':—भविष्यामि *bhaviṣyāmi* 'I will become.'

जब काल के प्रत्यय के 'म्' और 'व्' के पहले कोई स्वर आता है तो उसे दीर्घ कर देते हैं। यथा—भवामि (मैं होता हूँ), भविष्यामि (मैं होऊँगा)।

121. In order that the foregoing set of terminations may serve for other tenses than the present, they require to be variously modified. For instance, as may be gathered from No. 28, the syllable स्य *sya* requires to be interposed when the sense is to be future. Again, to express time past, (that of the 1st preterite) the final *i* of the singular is dropped, and the vowel अ *a* is prefixed to the verb as an augment. Thus अभवत् *abhavat* 'he became'.

पहले दिये गये क्रियाओं के प्रत्ययों को वर्तमान काल के अतिरिक्त अन्य कालों में प्रयुक्त करने के लिए उनमें अनेक प्रकार के परिवर्तन होते हैं। उदाहरण के लिए, जैसा कि सं० २८ से देखा जा सकता है कि जब भविष्यत् काल का अर्थ होता है तो 'स्य' जोड़ना पड़ता है। पुनः भूतकाल (सामान्य भूत लङ् लकार) का अर्थ बताने के लिये एकवचन के अन्तिम 'इ' को हटा दिया जाता है और क्रिया के पहले 'अ' स्वर आगम के रूप में रख दिया जाता है। यथा—अभवत् (वह हुआ)।

122. अहं 'I', त्वं 'thou', and सः 'he', are declined in the dual as follows :—

अहं (मैं) त्वं (तू) तथा 'सः' (वह) का द्विवचन में इस प्रकार रूप चलता है :—

Nom.	कर्ता	आवां	युवां	तौ
Acc.	कर्म	—	—	—
Inst.	करण	आवाभ्यां	युवाभ्यां	ताभ्यां
Dat.	संप्र०	—	—	—
Abl.	अपा०	—	—	—
Gen.	सं०	आवयोः	युवयोः	तयोः
Loc.	अधि०	—	—	—

Exercise 30. अभ्यास ३०

Translate the following sentences :—

Who art thou ? I go to the village. They two will go to the village. Do you two go to the wood ? Shall we two go to the sea-shore ? Thou seest my house. What dost thou do ? What dost thou wish ? What dost thou say ? I do not say anything. Art thou able, or not ? I am not able. I saw thy son.

निम्नलिखित वाक्यों का अनुवाद करो :—

तुम कौन हो ? मैं गाँव को जाता हूँ। वे दोनों गाँव को जाएँगे। क्या तुम दोनों गाँव को जाते हो ? क्या हम दोनों समुद्रतट को जाएँगे ? तू मेरा घर देखता है। तू क्या करता है ? तू क्या चाहता है ? तू क्या कहता है ? मैं कुछ भी नहीं कहता हूँ। तुम समर्थ हो या नहीं ? मैं समर्थ नहीं हूँ। मैंने तेरे पुत्र को देखा।

अद्य वयं क गच्छामः। यूयं समुद्रे न स्नाथ। तौ कस्मात् युध्यतः। भवान् कविर्न वा। अहमित्थं चिन्तयामि। अहं ग्रामं पुनर्गमिष्यामि। बालकौ सरसि नष्टौ। अहमित्थं करिष्यामीति त्वं कुतो न वदसि।

Lesson 30. पाठ ३०

123. The *infinitive* is formed by adding तुं *tum.* Ex. यातुं *yātum* 'to go'.

परभावी असमापिका क्रियापद संस्कृत में 'तुं' जोड़कर बनायी जाती है। उदाहरण—यातुं (जाने के लिए)।

Many verbs insert इ *i* before तुं. Ex. भवितुं *bhavitum* 'to become'.

अनेक क्रियाओं में 'तुं' के पहले 'इ' लग जाता है। उदा० भवितुं 'होने के लिए'।

The following is a list of infinitives :

तुं प्रत्यय वाले कुछ रूपों की सूची निम्नलिखित है :—

कृ	*kr̥*	Makes	कर्त्तुं	*karttum,*	to make.	बनाने के लिए
गम्	*gam*	—	गन्तुं	*gantum,*	to go.	जाने के लिए
जि	*ji*	—	जेतुं	*jetum,*	to conquer.	जीतने के लिए
दा	*dā*	—	दातुं	*dātum,*	to give.	देने के लिए
दृश्	*dr̥ś*	—	द्रष्टुं	*draṣṭum,*	to see.	देखने के लिए
स्था	*sthā*	—	स्थातुं	*sthātum,*	to stay.	ठहरने के लिए
वच्	*vac*	—	वक्तुं	*vaktum,*	to speak.	बोलने के लिए

Exercise 31. अभ्यास ३१

Translate the following sentences :—

Rāvaṇa is not able to conquer Rāma. The father wishes to give the book to the son. The two sons wish to go to the wood. Dost thou wish to go to the sea-shore ? I wish to see thy father. Do you two wish to

stay here? What dost thou wish to do? It is improper to do thus. To speak thus is unsuitable.

निम्नलिखित वाक्यों का अनुवाद करो :—

रावण राम को जीतने के लिए समर्थ नहीं है। पिता पुत्र को पुस्तक देने की इच्छा करता है। दो पुत्र वन को जाना चाहते हैं। क्या तू समुद्र-तट को जाना चाहता है? मैं तेरे पिता को देखना चाहता हूँ। क्या तुम दोनों यहाँ रुकना चाहते हो? तू क्या करना चाहता है? ऐसा करना अनुचित है। ऐसा बोलना अयोग्य है।

भक्ताः पर्व्वतं गन्तुमिच्छन्ति। त्वं अरुन्धतीं तारां द्रष्टुं न शक्नोषि। नावस्तीरं यातुं न शक्ताः। अत्र स्थातुमुचितम्। तत्र स्थातुं योग्यमिति पिता ब्रवीति। मन्दं वक्तुमुचितमस्ति। वृद्धेभ्यो धनं दातुं योग्यम्।

Lesson 31. पाठ ३१

124. The *present participle active* ends in अत् *at*. Thus भवत् *bhavat* 'being', गच्छत् *gacchat* 'going', तिष्ठत् *tiṣṭhat* 'staying'.

वर्तमानकालिक कर्तृवाच्य कृदन्त के अन्त में 'अत्' आता है। इस प्रकार 'भवत्' होते हुए, 'गच्छत्' जाते हुए, 'तिष्ठत्' रुकते हुए।

This participle is declined as follows :—

इस कृदन्त का रूप इस प्रकार चलता है।

Sing. एकवचन Nom. कर्ता गच्छन् *gacchan*, 'going'.
Acc. कर्म गच्छन्तं *gacchantam.*
Dual. Nom. and Acc. गच्छन्तौ *gacchantau.*
द्विवचन कर्ता और कर्म
Plu. बहुवचन Nom. कर्ता गच्छन्तः *gacchantaḥ.*

The rest of the declension may be effected by subjoining the terminations from No. 114.

शेष रूप ११४ से प्रत्ययों को जोड़कर बनाये जा सकते हैं।

125. The *indefinite past participle active* ends in तवत् *tavat* :—as कृतवत् *kṛtavat* 'was making'. It is declined like the present participle (No. 124) except that it takes a long vowel in the nom. sing.,—thus कृतवान् *kṛtavān*. It is commonly used with an auxiliary verb—thus अहं कृतवानस्मि *aham kṛtavānasmi* 'I was doing.'

भूतकालिक कर्तृवाच्य कृदन्त के अन्त में 'तवत्' आता है; यथा 'कृतवत्' बना रहा था। इसका रूप वर्तमान के कृदन्त (१२४) के समान चलता है, केवल अन्तर यह है कि इसमें कर्त्ता एकवचन में स्वर दीर्घ हो जाता है—यथा कृतवान्। इसका प्रयोग सामान्यतः एक सहायक क्रिया के साथ होता है जैसे—अहं कृतवानस्मि (मैं कर रहा था)।

126. A class of *future participles,* most extensively employed, is formed by the affixes तव्य *tavya*, अनीय *anīya*, and य *ya*. Examples: भवितव्य *bhavitavya* 'what is to be or ought to be'; सहनीय *sahanīya* 'what is to be endured'; लभ्य *labhya* 'to be acquired'.

भविष्यत्काल के कृदन्त का एक वर्ग, जिसका प्रचुर प्रयोग होता है, तव्य, अनीय और य प्रत्यय लगाकर बनाया जाता है। उदाहरण—भवितव्य (जो होना है, या जो होना चाहिए); सहनीय (जिसे सहना है), लभ्य (जिसे प्राप्त करना है)।

The following are further examples :—

निम्नलिखित कुछ अतिरिक्त उदाहरण हैं :—

वक्तव्य	*vaktavya*	to be spoken.	कहा जाने योग्य
भज्य	*bhajya*	to be worshipped.	पूजा करने योग्य
शक्य	*śakya*	possible.	संभव होने योग्य

सह्य	*sahya*	endurable.	सहन करने योग्य
कार्य्य	*käryya*	to be made.	करने योग्य
द्रष्टव्य	*drastavya*	to be seen.	देखने योग्य
गन्तव्य	*gantavya*	to be gone.	जाने योग्य

127. The future participle is much used in the nom. sing. neuter. Thus त्वया गन्तव्यं *tvayā gantavyam* 'it is to be gone by thee'—i. e., 'thou art to go':—तथा भवितव्यं तेन 'thus it is to be become by him'—i. e. 'thus must he become'.

भविष्यत्काल के कृदन्त का कर्त्ताकारक एकवचन नपुंसकलिंग में बहुत प्रयोग होता है। यथा 'त्वया गन्तव्यं' (तुम्हें वहाँ जाना है) तथा भवितव्यं तेन (उसे ऐसा होना है अर्थात् उसे ऐसा अवश्य होना चाहिए)।

Exercise 32. अभ्यास ३२

Translate the following sentences :—

निम्नलिखित वाक्यों का अनुवाद करो—

तथा कदापि न मया कर्त्तव्यम्। अहं दक्षिणारण्ये गच्छन् वृद्धव्याघ्रमपश्यम्। स व्याघ्रः सरसि स्नात्वा कुशहस्तो वदति। हे पान्थ कुत्र त्वया गन्तव्यम्। दुःखं सहनीयमस्ति रावणेन। किं कर्त्तव्यं मम पुत्रैः।

Lesson 32. पाठ ३२

128. Verbs compounded with prepositions sometimes retain the meaning of the original; more frequently they have the sense of their component elements; but in many instances they have significations which depart widely from those which they might be expect-

ed, from their composition, to convey. The explanation of such compounds is the province of the dictionary.

उपसर्गों के साथ जुड़ने पर कभी-कभी क्रियाओं के मौलिक अर्थ बने रहते हैं और प्रायशः उनका अर्थ उनके सम्बद्ध तत्त्वों का होता है; किन्तु अनेक स्थलों पर उनके ऐसे अर्थ भी होते हैं जो उस अर्थ से बिल्कुल भिन्न होते हैं जिस अर्थ का हम अनुमान करते है। इस प्रकार के संयोगों की व्याख्या शब्दकोश का विषय है।

129. Of the twenty-one prepositions, the most useful here follow, the sense being exemplified in verbs or in derivatives of frequent occurrence from verbs compounded with the prepositions.

इक्कीस उपसर्गों में सर्वाधिक उपयोगी उपसर्ग नीचे दिये जाते हैं उनके अर्थ को क्रियाओं द्वारा या उपसर्ग से युक्त क्रियाओं से व्युत्पन्न तथा बार-बार प्रयुक्त होने वाले शब्दों के उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया गया है।

अति *ati* 'beyond'. बाहर अतिक्रामति *atikrāmati* 'he goes beyond'. वह उसके बाहर जाता है

अधि *adhi* 'over'. ऊपर अधिगत *adhigata* 'gone over' (as a book when read through). ऊपर गया हुआ (जैसे अच्छी प्रकार पढ़ी गई पुस्तक)

अनु *anu* 'after, like' बाद, तरह अनुचरति *anucarati* 'he goes after' (as a disciple goes after and imitates his preceptor). वह पीछे चलता है (जैसे शिष्य अपने गुरु का अनुकरण करता है)

अप *apa* 'off'. दूर अपहरति *apaharati* 'he carries off'. वह दूर ले जाता है

अभि *abhi* 'opposite'. ओर अभिगच्छति *abhigacchati* 'he approaches'. वह पास जाता है

आ *ā* 'reversing'. विपरीत आगच्छति *āgacchati* 'he comes'. वह आता है

आददाति *ādadāti* 'he takes'. वह लेता है

उप *upa* 'near'. निकट उपतिष्ठते *upatiṣṭhate* 'he stands near. वह निकट में खड़ा होता है।

निर् *nir* 'without'. बिना निर्दोष *nirdoṣa* 'without fault' बिना दोष के

परि *pari* 'around'. चारो ओर परिधि *paridhi* 'perimeter'. घेरा

प्रति *prati* 'again, back' पुनः, पीछे प्रतीकार *pratīkāra* 'retaliation'. बदला प्रतिदिनं *pratidinam* 'day by day'. प्रत्येक दिन

वि *vi* 'apart'. दूर विकार *vikāra* 'change of form'. रूप का परिवर्तन वियोग *viyoga* 'disjunction'. अलगाव

सं *sam* 'with'. साथ सङ्गम *saṅgama* 'association'. मिलना

130. Of prepositions used separately or without verbs, प्रति *prati* 'towards' governs the accusative; सह *saha* 'with' the instrumental, and विना *vinā* 'without, except', either the accusative or the instrumental.

पृथक् रूप में या क्रियाओं के विना प्रयुक्त होने वाले अव्ययों (जिन्हें कर्मप्रवचनीय कहा जाता है) में प्रति (ओर) के योग में कर्मकारक होता है, 'सह' (साथ) के योग में करण और 'विना' के योग में या तो कर्म होता है या करण कारक।

Exercise 33. अभ्यास ३३

Translate the following sentences :—

This book is to be gone over by thee. The disciple goes after his preceptor. Rāvaṇa carries off Sītā. The traveller approaches the tiger. The traveller does not approach the tiger without fear. The father, with the son, stands near the tree. The crow does not associate with the jackal. Day by day the crow and the jackal associate with the deer. How is their disjunction to be made ?

निम्नलिखित वाक्यों का अनुवाद करो :—

इस पुस्तक को तुम्हें पढ़ लेना है। शिष्य अपने गुरु के पीछे चलता है। रावण सीता को ले भागता है। राही बाघ के पास जाता है। राही बाघ के पास बिना भय के नहीं जाता है। पिता पुत्र के साथ पेड़ के नीचे खड़ा होता है। कौआ सियार के साथ नहीं मिलता है। प्रतिदिन कौआ और सियार मृग के साथ मेल करते हैं। उनका वियोग कैसे करना है ?

धर्ममतिक्रामति प्रतिदिनम्। शिष्या अनुचरिष्यन्ति गुरुम्। सीतामपजहार रावणः। भयं विना व्याघ्रो नोपगन्तव्यः। पुत्रः पितरमुपतिष्ठते। अत्र प्रतीकारो न कर्त्तव्यः। कुत आगतोऽयं शृगालः। पुत्रस्य हस्तात् पिता पुस्तकमाददाति। अनधिगतशास्त्रा मम पुत्राः किं वक्तुं शक्नुवन्ति।

Lesson 33. पाठ ३३

It would have been observed, in Lesson 24, that the 3d pers. sing. of the imperative ends in तु. In the *passive* the termination is तां *tām*—preceded by the य *ya*

of the passive (No. 91). Thus श्रूयतां *śrūyatām* 'let it be heard'; क्रियतां *kriyatām* 'let it be done'; दृश्यतां *dṛśyatām* 'let it be seen'; उच्यतां *ucyatām* 'let it be told'.

पाठ २४ में यह देखा गया होगा कि आज्ञार्थक क्रिया रूप के प्रथम-पुरुष, एकवचन के अन्त में 'तु' आता है। कर्मवाच्य में यह 'ताम्' हो जाता है, जिसके पहले कर्मवाच्य का 'य' (नियम ९१) जोड़ा जाता है। यथा—'श्रूयतां—(यह सुना जाय); क्रियतां (यह किया जाय) दृश्यतां (यह देखा जाय) उच्यतां (यह कहा जाय)।

132. In Lesson 24, the *potential* is exhibited ending in यात् *yāt*—as कुर्य्यात् *kuryyāt* 'he should make' :—but the form in which it is more commonly met with is that of the 1st conjugation, where it ends in एत् *et*. Thus भवेत् *bhavet* 'he should be'; भवेयुः *bhaveyuḥ* 'they should be'.

पाठ २४ में विधिलिङ् के अन्त में 'यात्' दिखाया गया है जैसे—कुर्य्यात (उसे करना चाहिए) किन्तु जिस रूप में यह सामान्यतः पाया जाता है वह प्रथम गण का होता है जिसमें इसके अन्त में 'एत्' आता है; यथा भवेत् (उसे होना चाहिए) 'भवेयुः' (उन्हें होना चाहिए)।

Exercise 34. अभ्यास ३४

Translate the following sentences :—

The preceptor should be a good man. The horse should be white. The disciple should not be perplexed. Let the wish be heard by the fathter. Let the deer sport in the forest. Let the beautiful girl smile. Let the crow go. Why should it be improper to do thus ? He should obtain merit. They should go home. Let not injury be done to any one.

निम्नलिखित वाक्यों का अनुवाद करो :—

गुरु को सज्जन होना चाहिए। घोड़ा सफेद होना चाहिए। शिष्य को घबड़ाना नहीं चाहिए। पिता की इच्छा को सुने। मृग को वन में आनन्द मनाने दो। सुन्दर लड़की को मुस्कराने दो। कौए को जाने दो। यह करना क्यों अनुचित है ? उसे पुण्य प्राप्त करना चाहिए। उन्हें घर जाना चाहिए। किसी को कष्ट न होने दो।

वने पान्थो न नश्येत्। माताऽन्यथा जानीयात्। शिष्यः कवेः पुस्तकानि गृह्णीयात्। बको जले स्नायात। वृद्धं व्याघ्रं न हिंस्यात्। पितुर्गृहे पूजां कुर्यात्। अस्य पुस्तकस्य द्वितीयभागः पश्चात् प्रकाशितो भवेत्।

